



मिड या स्मॉल-कैप फंड: 10 साल में किसने दिखाया दम

दोनों का निफ्टी-50 से बेहतर रहा प्रदर्शन

- सिर्फ ज्यादा रिटर्न पर न करें फैसला, पहले जोखिम व वोलैटिलिटी भी समझें
- स्मॉल-कैप ने बेंचमार्क को पीछे छोड़ा, मिड-कैप कम जोखिम संग बेहतर
- विशेषज्ञ बोले, गिरावट से घबराने के बजाय विविधीकृत पोर्टफोलियो अपनाएं
- दोनों फंडों में संपत्ति बनाने की क्षमता, लेकिन क्षमता के अनुसार करें फैसला
- विविधीकरण और लंबी अवधि बेहतर रिटर्न दिलाने की सबसे कारगर रणनीति

निवेश मंत्रा

बिगनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले अधिकांश निवेशकों के सामने सबसे बड़ा सवाल होता है कि लंबी अवधि के लिए मिड-कैप फंड चुने या स्मॉल-कैप फंड। दोनों श्रेणियों ने पिछले एक दशक में शानदार रिटर्न दिए हैं और निवेशकों की संपत्ति में उल्लेखनीय वृद्धि की है। हालांकि, सिर्फ रिटर्न देखकर निवेश का फैसला करना सही नहीं होता। किसी भी निवेश विकल्प का चयन करते समय उसके जोखिम, उतार-चढ़ाव, निवेश अवधि और वित्तीय लक्ष्य को भी ध्यान में रखना जरूरी है। एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले 10 वर्षों में मिड-कैप और स्मॉल-कैप दोनों श्रेणियों ने लंबी अवधि के निवेशकों को आकर्षक रिटर्न दिया है। जहां स्मॉल-कैप फंड का औसत 10 वर्षीय वार्षिक रिटर्न (सीएजीआर) 16.69 प्रतिशत रहा, वहीं मिड-कैप फंड ने 16 प्रतिशत का औसत रिटर्न दिया। यानी दोनों के बीच रिटर्न का अंतर बहुत अधिक नहीं है, लेकिन जोखिम और प्रदर्शन के तरीके में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है।

स्मॉल-कैप ने बेंचमार्क को पछड़ा

आंकड़ों के अनुसार, स्मॉल-कैप फंड अपने बेंचमार्क बीएसई 250 स्मॉलकैप टोटल रिटर्न इंडेक्स से बेहतर प्रदर्शन करने में सफल रहे। दूसरी ओर, मिड-कैप फंड अपने बेंचमार्क बीएसई 150 मिडकैप टोटल रिटर्न इंडेक्स से थोड़ा पीछे रहे। इससे यह संकेत मिलता है कि स्मॉल-कैप फंड मैनेजरो ने बेहतर स्टॉक चयन के जरिए अतिरिक्त रिटर्न (अल्फा) बनाने में सफलता हासिल की। 10 वर्षों के प्रदर्शन में निपॉन इंडिया स्मॉल कैप डायरेक्ट, क्वांट स्मॉल कैप, एक्सिस स्मॉल कैप और एसबीआई स्मॉल कैप जैसे फंड शीर्ष प्रदर्शनकर्ताओं में शामिल रहे। वहीं मिड-कैप श्रेणी में इनवेस्को इंडिया मिड कैप, एडलवाइड मिड कैप, निपॉन इंडिया ग्रोथ और कोटक मिडकैप फंड ने बेहतरीन प्रदर्शन किया।



रिटर्न के साथ जोखिम भी समझें

अक्सर निवेशक केवल अधिक रिटर्न देखकर निवेश कर देते हैं, जबकि वास्तविक तस्वीर जोखिम के आंकड़ों से सामने आती है। पिछले तीन वर्षों के आंकड़ों के अनुसार, स्मॉल-कैप फंड का स्टैंडर्ड डिविएशन 20.33 प्रतिशत रहा, जबकि मिड-कैप फंड का यह आंकड़ा 17.88 प्रतिशत था। इसका मतलब है कि स्मॉल-कैप फंड में कीमतों का उतार-चढ़ाव ज्यादा रहा और इनमें निवेश करने वालों को अधिक अस्थिरता का सामना करना पड़ा। इसी तरह जोखिम के मुकाबले मिलने वाले रिटर्न को मापने वाले शार्प रेशियो में भी मिड-कैप फंड आगे रहे। मिड-कैप फंड का शार्प रेशियो 0.79 रहा, जबकि स्मॉल-कैप फंड का 0.69। इसका अर्थ है कि मिड-कैप फंड ने अपेक्षाकृत कम जोखिम लेकर बेहतर जोखिम-समयोजित रिटर्न दिया। हालांकि दोनों श्रेणियों का सॉर्टिनो रेशियो समान रहा, जिससे स्पष्ट होता है कि डाउनसाइड जोखिम को ध्यान में रखने पर दोनों का प्रदर्शन लगभग बराबर रहा।

लंबी अवधि के निवेशकों को मिला फायदा : विशेषज्ञों का मानना है कि पिछले 10 वर्षों की सबसे बड़ी सीख यही है कि जिन्होंने बाजार की गिरावट के दौरान घबराकर निवेश नहीं निकाला और लंबे समय तक निवेश बनाए रखा, उन्हें दोनों श्रेणियों में शानदार रिटर्न मिला। बाजार में गिरावट हर चक्र का सामान्य हिस्सा है और इसे निवेश यात्रा का स्वाभाविक चरण माना जाना चाहिए। मिड-कैप और स्मॉल-कैप फंड को केवल अधिक उतार-चढ़ाव के कारण नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। लंबी अवधि में दोनों श्रेणियों ने निफ्टी 50 से बेहतर प्रदर्शन किया है और निवेशकों के लिए अच्छी संपत्ति बनाने की क्षमता दिखाई है।

बहुत ज्यादा एसआईपी से नहीं, सही रणनीति से बनेगी दौलत

नया म्यूचुअल फंड जोड़ने से पहले जांचें कि वास्तव में जरूरत है या नहीं

बिगनेस डेस्क

शेयर बाजार में बढ़ती जागरूकता के साथ म्यूचुअल फंड में निवेश करने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। बड़ी संख्या में निवेशक हर महीने सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश कर रहे हैं। अक्सर यह धारणा बन जाती है कि जितने अधिक म्यूचुअल फंड होंगे, उतना ही बेहतर रिटर्न मिलेगा और जोखिम कम होगा। लेकिन निवेश विशेषज्ञों का कहना है कि यह सोच हमेशा सही नहीं होती। कई बार जरूरत से ज्यादा फंड रखने से पोर्टफोलियो में एक जैसी कंपनियों का दोहराव बढ़ जाता है, जिससे वास्तविक विविधीकरण नहीं हो पाता और निवेश का उद्देश्य भी प्रभावित हो सकता है।

फंडों की संख्या नहीं, गुणवत्ता और उद्देश्य है महत्वपूर्ण

विशेषज्ञों के अनुसार, किसी निवेशक के लिए कितनी एसआईपी या कितने म्यूचुअल फंड होने चाहिए, इसका कोई तय नियम नहीं है। यह पूरी तरह निवेश राशि, वित्तीय लक्ष्य, निवेश अवधि और जोखिम उठााने की क्षमता पर निर्भर करता है। यदि कोई निवेशक हर महीने 10 से 15 हजार रुपये की एसआईपी करता है, तो उसके लिए चार से छह अच्छे म्यूचुअल फंड पर्याप्त हो सकते हैं। वहीं, 40 से 50 हजार रुपये या उससे अधिक की मासिक एसआईपी करने वाले निवेशक आठ से दस फंड तक रख सकते हैं। हालांकि, इन फंडों का चयन अलग-अलग श्रेणियों और अलग-अलग एसेट मैनेजमेंट कंपनियों (एएमसी) से होना चाहिए, ताकि पोर्टफोलियो में वास्तविक विविधीकरण बना रहे।



ओवर-डाइवर्सिफिकेशन से भी हो सकता है नुकसान

निवेश में विविधीकरण जरूरी है, लेकिन जरूरत से ज्यादा विविधीकरण नुकसानदेह भी हो सकता है। यदि किसी निवेशक के कई फंड एक ही तरह की कंपनियों में निवेश करते हैं, तो फंडों की संख्या बढ़ने के बावजूद जोखिम कम नहीं होता। उदाहरण के लिए यदि किसी निवेशक के पास 10 इक्विटी फंड हैं और अधिकांश फंड एचडीएफसी बैंक, रिलायंस इंडस्ट्रीज, आईसीआईसीआई बैंक जैसी बड़ी कंपनियों में ही निवेश करते हैं, तो अलग-अलग स्कीम होने के बावजूद वास्तविक निवेश लगभग समान रहेगा। ऐसे में पोर्टफोलियो केवल दिखने में बड़ा होगा, लेकिन उसमें नई विविधता नहीं जुड़ेगी।

छोटी-छोटी बचत से बनाएं बड़ा फंड, भविष्य होगा सुरक्षित

मनी मंत्रा

बिगनेस डेस्क

बदली महंगाई, बदलती जीवनशैली और बढ़ते खर्चों के बीच हर व्यक्ति की सबसे बड़ी चिंता होती है कि आखिर बचत कैसे बढ़ाई जाए। आम धारणा यह है कि पैसे बचाने के लिए अपनी पसंद, शौक और मनोरंजन पर रोक लगानी पड़ती है, लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि अच्छी बचत का मतलब कंजूसी करना नहीं, बल्कि समझदारी से खर्च करना है। यदि आय, खर्च और निवेश के बीच संतुलन बनाया जाए तो बिना लाइफस्टाइल से समझौता किए हर महीने अच्छी-खासी बचत की जा सकती है। दरअसल, आज के समय में वित्तीय सुरक्षा केवल अधिक कमाई पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करता है कि कमाई का कितना हिस्सा सही तरीके से उपयोग और निवेश किया जा रहा है। यदि व्यक्ति छोटी-छोटी वित्तीय आदतों में बदलाव कर ले तो वह न केवल अपने मासिक खर्चों को नियंत्रित कर सकता है, बल्कि भविष्य के बड़े वित्तीय लक्ष्यों जैसे घर खरीदना, बच्चों की शिक्षा, रिटायरमेंट और इमरजेंसी फंड को भी आसानी से पूरा कर सकता है।



खर्चों का रिकॉर्ड रखना बचत की पहली सीढ़ी

वित्तीय योजना की शुरुआत हमेशा इस सवाल से होती है कि आपका पैसा आखिर खर्च कहाँ हो रहा है। अधिकांश लोग यह मानते हैं कि वे बहुत अधिक खर्च नहीं करते, लेकिन जब महीनेभर के बैंक स्टेटमेंट या डिजिटल भुगतान का रिकॉर्ड देखा जाता है तो कई ऐसे खर्च सामने आते हैं, जिनकी वास्तव में कोई जरूरत नहीं होती। बिना इस्तेमाल वाले ओटीटी सब्सक्रिप्शन, बार-बार ऑनलाइन खाना मंगाना, छोटी-छोटी ऑनलाइन शॉपिंग, महंगी कॉफी या बार-बार कैफे का उपयोग जैसी आदतें महीने के अंत तक हजारों रुपये का अतिरिक्त खर्च करा देती हैं। यदि व्यक्ति अपने सभी खर्चों को मोबाइल ऐप, एक्सेल शीट या डायरी में दर्ज करना शुरू कर दे तो उसे तुरंत समझ आ जाएगा कि बचत की सबसे अधिक संभावना कहाँ है।

जरूरत और वैल्यू में फर्क समझना जरूरी

अक्सर लोग आकर्षक ऑफर या फैशन के प्रभाव में ऐसी चीजें खरीद लेते हैं, जिनकी उन्हें वास्तव में आवश्यकता नहीं होती। वित्तीय विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि हर खरीदारी से पहले खुद से तीन सवाल पूछें क्या यह वास्तव में जरूरी है? क्या इसका उपयोग लंबे समय तक होगा? और क्या इसे अभी खरीदना आवश्यक है? ऐसी वस्तुओं या अनुभवों पर खर्च करना बेहतर माना जाता है जो लंबे समय तक लाभ दें। उदाहरण के लिए, कोई नई रिक्ल सीखना, स्वास्थ्य पर खर्च करना, परिवार के साथ यात्रा करना या अच्छी किताबें खरीदना ऐसे निवेश हैं जो लंबे समय तक मूल्य देते हैं। इसके विपरीत केवल दिखावे के लिए की गई खरीदारी कुछ समय बाद महत्व खो देती है।

पोर्टफोलियो ओवरलैप पर रखें नजर

म्यूचुअल फंड चुनते समय सबसे महत्वपूर्ण बात पोर्टफोलियो ओवरलैप होती है। इसका अर्थ है कि दो अलग-अलग फंडों में कितनी समान कंपनियां शामिल हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि दो फंडों के बीच 20 से 30 प्रतिशत तक ओवरलैप है, तो इसे सामान्य माना जा सकता है। लेकिन यदि यह 40 से 50 प्रतिशत या उससे अधिक हो जाए, तो निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो की समीक्षा करनी चाहिए। अधिक ओवरलैप का मतलब है कि अलग-अलग फंड रखने के बावजूद निवेश लगभग एक जैसी कंपनियों में ही हो रहा है।

हर नया एनएफओ खरीदना जरूरी नहीं

कई निवेशक बाजार में आने वाले हर नए म्यूचुअल फंड ऑफर (एनएफओ) में निवेश कर देते हैं। उन्हें लगता है कि नया फंड भविष्य में बेहतर रिटर्न देगा। जबकि वास्तविकता यह है कि किसी भी एनएफओ में निवेश करने से पहले उसकी निवेश रणनीति, उद्देश्य और मौजूदा पोर्टफोलियो से उसका अंतर समझना जरूरी है। यदि नया फंड वही काम कर रहा है जो पहले से मौजूद फंड कर रहे हैं, तो उसमें निवेश करना केवल दोहराव बढ़ाएगा।

संतुलित एसेट एलोकेशन है सफलता की कुंजी

विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि निवेशकों को बाजार की तेजी या गिरावट देखकर फैसले लेने से बचना चाहिए। इसके बजाय लक्ष्य आधारित निवेश रणनीति अपनानी चाहिए। इक्विटी पोर्टफोलियो में लगभग 55 प्रतिशत निवेश लार्ज कैप, 25 प्रतिशत मिड कैप और 20 प्रतिशत स्मॉल कैप फंड में रखने से संतुलन बनाया जा सकता है। इसके साथ ही जरूरत के अनुसार डेट फंड या अन्य परिसंपत्तियों में भी निवेश रखना चाहिए, ताकि बाजार में उतार-चढ़ाव का प्रभाव कम हो।

- लाइफस्टाइल से समझौता किए बिना हर माह कुछ न कुछ बचत करें
- अच्छी बचत का मतलब कंजूसी नहीं, बल्कि समझदारी से खर्च करना
- आय, खर्च और निवेश के बीच संतुलन बनाया जाना जरूरी
- स्मार्ट मनी मैनेजमेंट से वर्तमान और भविष्य दोनों होंगे खुशहाल
- हर खरीदारी से पहले खुद से सवाल पूछें क्या यह वास्तव में जरूरी है

'फन बजट' बनाएं, बचत भी होगी व खुशी भी

कई लोग बचत करने के उद्देश्य में अपने सभी मनोरंजन संबंधी खर्च बंद कर देते हैं। शुरुआत में यह आसान लगता है, लेकिन कुछ समय बाद व्यक्ति मानसिक रूप से थक जाता है और फिर अचानक जरूरत से ज्यादा खर्च करने लगता है। इस स्थिति से बचने के लिए विशेषज्ञ हर महीने एक निश्चित राशि केवल मनोरंजन, घूमने-फिरने, फिल्म देखने या दोस्तों के साथ समय बिताने के लिए अलग रखने की सलाह देते हैं। इसे 'फन बजट' कहा जाता है। इससे व्यक्ति बिना किसी अपराधबोध के अपनी पसंद की गतिविधियों का आनंद ले सकता है और उसका कुल बजट भी नहीं बिगड़ता।

लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन बड़ा वित्तीय जाल

वित्तीय दुनिया में एक शब्द काफी लोकप्रिय है। 'लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन'। इसका मतलब है कि जैसे-जैसे आय बढ़ती है, वैसे-वैसे व्यक्ति अपने खर्च भी बढ़ा देता है। नई नौकरी मिलने पर महंगा मोबाइल खरीद लेना, वेतन बढ़ते ही लक्जरी कार की ईएमआई शुरू कर देना या हर सप्ताह महंगे रेस्टोरेंट जाना इसी प्रवृत्ति के उदाहरण हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि वेतन बढ़ने पर सबसे पहले बचत और निवेश की राशि बढ़ानी चाहिए। यदि हर वेतन वृद्धि का कम से कम 40 से 50 प्रतिशत हिस्सा सीधे एसआईपी, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य निवेश विकल्पों में लगाया जाए तो कुछ वर्षों में बड़ा निवेश कोष तैयार किया जा सकता है।

रोजमर्रा की छोटी आदतों में करें बड़ा बदलाव

बचत के लिए हमेशा बड़े बदलाव की जरूरत नहीं होती। छोटी-छोटी आदतें भी लंबी अवधि में बड़ा असर डालती हैं। उदाहरण के लिए, किसी भी सामान को खरीदने से पहले ऑनलाइन कीमतों की तुलना करना, कैशबैक और डिस्काउंट ऑफर का लाभ उठाना, अनावश्यक गैजेट अपग्रेड से बचना, बिजली और पानी की बचत करना तथा सप्ताह में कुछ दिनों बाहर खाने की बजाय घर का भोजन करना जैसी आदतें हर महीने अच्छी रकम बचा सकती हैं। इसी तरह क्रेडिट कार्ड का उपयोग केवल उनका ही करें, जितना समय पर चुका सकें। अनावश्यक ईएमआई से बचना और हर महीने आय का कम से कम 20 से 30 प्रतिशत बचत या निवेश के लिए अलग रखना वित्तीय अनुशासन का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

दोनों श्रेणियों ने दिया

शानदार रिटर्न, लेकिन जोखिम और उतार-चढ़ाव में मिड-कैप

विविधीकरण सबसे बेहतर रणनीति

विशेषज्ञों का कहना है कि पूरे निवेश को केवल स्मॉल-कैप या केवल मिड-कैप में लगाना समझदारी नहीं है। बेहतर रणनीति यह है कि निवेशकों को पोर्टफोलियो सभी मार्केट कैप में संतुलित रूप से विभाजित हो। उदाहरण के तौर पर यदि किसी निवेशक के 10 लाख रुपये पूरी तरह स्मॉल-कैप फंड में लगे हों और बाजार में गिरावट आए, तो पूरे पोर्टफोलियो पर उसका असर पड़ेगा। जबकि यदि पोर्टफोलियो में लगभग 55 प्रतिशत लार्ज-कैप, 23 प्रतिशत मिड-कैप और 22 प्रतिशत स्मॉल-कैप का संतुलित निवेश हो, तो बाजार की गिरावट का प्रभाव काफी कम हो सकता है। यही कारण है कि वित्तीय योजनाकार हमेशा विविधीकरण को सफल निवेश की सबसे महत्वपूर्ण रणनीति मानते हैं।

किस निवेशक के लिए कौन सा फंड ?

यदि आपकी निवेश अवधि 7 से 10 वर्ष या उससे अधिक है और आप बाजार के उतार-चढ़ाव को सहन कर सकते हैं, तो स्मॉल-कैप फंड आपके पोर्टफोलियो में बेहतर वृद्धि की संभावना जोड़ सकते हैं। वहीं यदि आप अछूता रिटर्न चाहते हैं लेकिन अपेक्षाकृत कम जोखिम लेना पसंद करते हैं, तो मिड-कैप फंड अधिक उपयुक्त विकल्प हो सकते हैं। पहली बार निवेश करने वालों के लिए भी सलाह दी जाती है कि वे सीधे स्मॉल-कैप में बड़ी राशि लगाने के बजाय लार्ज-कैप और मिड-कैप के साथ सीमित हिस्सेदारी स्मॉल-कैप में रखें।

एसआईपी धन सृजन का सबसे प्रभावी तरीका

पिछले 10 वर्षों का रिकॉर्ड बताता है कि मिड-कैप और स्मॉल-कैप फंडों ने दोनों श्रेणियों ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। जहां स्मॉल-कैप फंड ने थोड़ा अधिक रिटर्न और बेहतर अल्फा दिया, वहीं मिड-कैप फंड ने कम उतार-चढ़ाव और बेहतर जोखिम-समयोजित प्रदर्शन के दम पर अपनी अलग पहचान बनाई। निवेशकों को केवल अधिक रिटर्न के आकर्षण में निर्णय लेने के बजाय अपने वित्तीय लक्ष्य, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता के आधार पर पोर्टफोलियो तैयार करना चाहिए। निरन्तर एसआईपी, लंबी अवधि का नजरिया और विविधीकृत निवेश रणनीति ही धन सृजन का सबसे प्रभावी तरीका साबित हो सकती है।

निवेशकों को मिला बड़ा फायदा

5 वर्ष में 101 इक्विटी फंड्स ने दोगुना किया निवेश

- 310 में से हर तीसरे फंड ने दिया 100% से अधिक रिटर्न
- चार स्कीमों ने सिर्फ तीन साल में किया कमाल
- पुराने रिटर्न देखकर निवेश न करें, सेक्टरल फंड्स में लें एंटी

बिगनेस डेस्क

शेयर बाजार में पिछले दो वर्षों के उतार-चढ़ाव के बावजूद लंबी अवधि में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। आंकड़े बताते हैं कि पिछले पांच वर्षों में 310 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में से 101 फंड्स ने निवेशकों का पैसा दोगुना या उससे अधिक कर दिया। यानी हर तीन में से लगभग एक इक्विटी फंड ने 100 फीसदी से ज्यादा एक्सील्यूट रिटर्न दिया। इतना ही नहीं, चार म्यूचुअल फंड ऐसे भी रहे जिन्होंने केवल तीन वर्षों में ही निवेशकों का पैसा दोगुना कर दिया। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि निवेश का फैसला केवल पुराने रिटर्न के आधार पर नहीं करना चाहिए, क्योंकि बाजार और सेक्टर का प्रदर्शन समय के साथ बदलता रहता है।

इंफ्रास्ट्रक्चर और पीएसयू फंड्स रहे सबसे आगे

पांच साल के प्रदर्शन पर नजर डालें तो सबसे अधिक फायदा सेक्टरल और थीमैटिक फंड्स में निवेश करने वालों को मिला। खासतौर पर इंफ्रास्ट्रक्चर, पीएसयू, पावर और मिडकैप से जुड़े फंड्स ने जबरदस्त रिटर्न दिए।

सबसे आगे आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल इंफ्रास्ट्रक्चर फंड रहा, जिसने पांच साल में करीब 188 प्रतिशत का एक्सील्यूट रिटर्न दिया। यानी एक लाख रुपये का निवेश लगभग 2.88 लाख रुपये हो गया। इसके बाद एसबीआई पीएसयू फंड और एलआईसी एमएफ इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने करीब 183 प्रतिशत का रिटर्न दिया। वहीं आदित्य बिड़ला सम लाइफ पीएसयू इक्विटी फंड ने 179 प्रतिशत, डीएसपी इंडिया टाइगर फंड ने 176.51 प्रतिशत और निपॉन इंडिया पावर एंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने लगभग 174 प्रतिशत का रिटर्न दिया। डायवर्सिफाइड मिडकैप श्रेणी में मोतीलाल ओसवाल मिडकैप फंड ने पांच वर्षों में करीब 172 प्रतिशत का रिटर्न देकर निवेशकों को शानदार कमाई कराई।

तीन साल में पैसा दोगुना करने वाले फंड

अगर केवल तीन वर्षों के प्रदर्शन को देखें तो एचडीएफसी डिफेंस फंड सबसे आगे रहा। इस फंड ने करीब 174 प्रतिशत का एक्सील्यूट रिटर्न दिया। यानी तीन साल पहले लगाए गए एक लाख रुपये बढ़कर लगभग 2.74 लाख रुपये हो गए। इसके अलावा बंधन स्मॉल कैप फंड ने 106 प्रतिशत, क्वांट बीएफएसआई फंड ने 101.73 प्रतिशत और एलआईसी एमएफ इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने 100.24 प्रतिशत का रिटर्न देकर निवेशकों का पैसा दोगुना कर दिया। हालांकि एसबीआई पीएसयू फंड 99.12 प्रतिशत रिटर्न के साथ इस सूची में शामिल होने से मामूली अंतर से चूक गया।

दो साल में कई स्टार फंड्स की रपतार हुई धीमी

- पांच वर्षों में शानदार प्रदर्शन करने वाले कई फंड्स का पिछले दो वर्षों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत कमजोर रहा है।
- उदाहरण के लिए, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने पिछले दो वर्षों में केवल 5.28 प्रतिशत रिटर्न दिया। एसबीआई पीएसयू फंड का रिटर्न 0.75 प्रतिशत रहा, जबकि आदित्य बिड़ला सम लाइफ पीएसयू इक्विटी फंड और इनवेस्को इंडिया पीएसयू इक्विटी फंड ने इस अवधि में नकारात्मक रिटर्न दर्ज किया।
- इसी तरह एचडीएफसी इंफ्रास्ट्रक्चर फंड और डीएसपी इंडिया टाइगर फंड का प्रदर्शन भी पिछले दो वर्षों में काफी धीमा रहा। इससे साफ है कि किसी सेक्टर में तेज रेली के बाद कुछ समय तक ठहराव या गिरावट आना सामान्य बात है।



बहुजन समाज को सफाई तक सीमित न रखें

हिसार। बहुजन समाज पार्टी के हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष कृष्ण जमालपुर ने कांग्रेस नेता रणदीप सिंह सुरजेवाला के हालिया बयान पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि बहुजन समाज, वाल्मीकि समाज और रविदासिया समाज को केवल कचरा उठाने वाली गाड़ियों तक सीमित समझना अपमानजनक सोच को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि इस तरह की मानसिकता समाज के आत्मसम्मान और उसकी क्षमता का अनादर करती है। जाट धर्मशाला का आयोजित बैठक में कृष्ण जमालपुर ने कहा कि यदि किसी राजनीतिक दल की सोच यह है कि बहुजन समाज के विकास का अर्थ केवल सफाई कार्यों के लिए संसाधन उपलब्ध कराना है, तो यह समाज की प्रतिभा और उपलब्धियों का अपमान है।



पुलिस ने होटल व ढाबों में रिकॉर्ड की जांच की

हांसी। जिले में अपराधों की रोकथाम के उद्देश्य से हांसी पुलिस ने शनिवार को होटल, गेस्ट हाउस, लॉज, पीजी और प्रमुख ढाबों पर चेंकिंग अभियान चलाया। अभियान के दौरान पुलिस टीमों ने विभिन्न प्रतिष्ठानों में ठहरे लोगों के रिकॉर्ड, पहचान संबंधी दस्तावेज और रजिस्ट्रों की गहन जांच की। साथ ही यह भी परखा गया कि आगतकों का विवरण नियमानुसार दर्ज किया जा रहा है या नहीं। जांच के दौरान जिन संचालकों के रिकॉर्ड में खामियां मिलीं, उन्हें मौके पर ही आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए भविष्य में नियमों का कड़ाई से पालन करने की चेतावनी दी गई। पुलिस अधिकारियों ने होटल, गेस्ट हाउस संचालकों को निर्देश दिए कि बिना वैध पहचान पत्र किसी भी को कमरा न दें।

दो जीवीपी प्वाइंट खत्म कर किया पौधरोपण

हिसार। सरकार के निर्देशानुसार प्रदेशभर में 19 जुलाई तक चल रहे ‘स्वच्छता से स्वागत’ अभियान चल रहा है। जिसके तहत शनिवार को नगर निगम द्वारा दो जीवीपी प्वाइंटों को खत्म कर सौन्दर्यकरण कर पौधरोपण किया। मेयर प्रवीण पोपली और निगमायुक्त सी. जयश्रद्धा के निर्देशानुसार शहर के विभिन्न गावेंज वल्नरेबल पॉइंट (जीवीपी) को समाप्त कर वहां व्यापक सफाई करवाई जा रही है।

जनता के पैसे से सरकार कर रही समझौता

हिसार। इनेलो के राष्ट्रीय संरक्षक एवं पूर्व मंत्री प्रो. संपत सिंह ने जीई-सीनीपट हाइड्रोजन ट्रेन परियोजना को लेकर हरियाणा सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए इसे जनता के पैसे और ऊर्जा दक्षता से समझौता करार दिया है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों का हवाला देते हुए कहा कि इलेक्ट्रिक ट्रेन की तुलना में हाइड्रोजन ट्रेन को समान दूरी तय करने के लिए ढाई से तीन गुना अधिक बिजली की आवश्यकता होती है, क्योंकि हाइड्रोजन उत्पादन, भंडारण और परिवहन की प्रक्रिया में भारी मात्रा में ऊर्जा नष्ट होती है। पूर्व मंत्री ने परियोजना में इस्तेमाल होने वाले फ्यूल सेल को कनाडा से आयात करने पर भी सवाल उठाया।

हेरोइन के साथ बाइक सवार गिरफ्तार

हिसार। हरियाणा स्टेट नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की हिसार यूनिट ने एक नशा तस्कर को गिरफ्तार किया है। हिसार यूनिट के इंचार्ज सब इंस्पेक्टर सत्यपाल सिंह ने बताया कि पुलिस टीम ने बाइपास पर पंडित वेण्णां ढाबा के पास से एक सदिग्ध युवक को काबू किया। आरोपी की पहचान मलकीत सिंह उर्फ मलकीत निवासी पीरावाली के रूप में हुई है, जो मोटरसाइकिल पर किसी को नशा बेचने की फिराक में था।

बिश्नोई समाज के दबाव के बाद तेज हुई कार्रवाई खरगोश शिकार कांड में तीन पर केस अब मास्टरमाइंड पर कसेगा शिकंजा

हरिभूमि न्यूज़ ►►हिसार

सुलखनी-धान्सू क्षेत्र में सामने आए कथित खरगोश शिकार प्रकरण ने अब बड़ा कानूनी और सामाजिक मुद्दा बना लिया है। वन्यजीव संरक्षण को लेकर उठे

इस मामले में बिश्नोई समाज की एकजुटता और लगातार विरोध के बाद वाइल्ड लाइफ विभाग ने तीन नम ज द तहत दर्ज आरोपितों के खिलाफ केस खि ला फ

वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर लिया है। अब जांच का दायरा बढ़ाते हुए विभाग पूरे मामले के कथित मास्टरमाइंड और शिकार गिरोह से जुड़े अन्य लोगों तक पहुंचने में जुट गया है। बिश्नोई समाज के प्रतिनिधिमेंडल ने शनिवार को धान्सू डियर पार्क पहुंचकर वाइल्डलाइफ इंस्पेक्टर दिनेश जांगड़ा को ज्ञापन सौंपा और



हिसार। वाइल्ड लाइफ विभाग के इंस्पेक्टर दिनेश जांगड़ा को शिकायत देते बिश्नोई समाज के लोग। फोटो: हरिभूमि

►► किसी भी दोषी को नहीं बख्शेंगे: जांगड़ा

वाइल्डलाइफ विभाग के इंस्पेक्टर दिनेश जांगड़ा ने बताया कि शुरुआती जांच में तीन नामजद आरोपितों के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। जांच के दौरान ऐसे संकेत मिले हैं कि घटना के पीछे अन्य लोगों की भी भूमिका हो सकती है। इसी कारण जांच का दायरा बढ़ाया गया है और टीम पूरे

मामले के कथित मास्टरमाइंड तक पहुंचने के लिए साक्ष्य जुटा रही है। उन्होंने कहा कि शिकार की योजना बनाने, उसे अंजाम देने या किसी भी रूप में सहयोग करने वाले किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा। जल्द ही पूरे मामले का खुलासा कर सभी दोषियों को कानून के दायरे में लाया जाएगा।

मामले में शामिल प्रत्येक व्यक्ति के खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई की

मांग की। प्रतिनिधिमेंडल ने स्पष्ट कहा कि वन्यजीवों के शिकार

वन्यजीव संरक्षण कानून के सख्त पालन की मांग

बिश्नोई समाज और ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की कि मामले में शामिल सभी लोगों की पहचान कर उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में वन्यजीवों के शिकार जैसी घटनाओं पर प्रभावी रोक लगाई जा सके। उनका कहना है कि वन्यजीव प्रकृति की अमूल्य धरोहर हैं और उनकी सुरक्षा समाज व प्रशासन दोनों की साझा जिम्मेदारी है।

बैग में मिला था मृत खरगोश

शिकायतकर्ता रोहताश पवार, विष्णु जांगू और रमेश जांगू के अनुसार 14 जुलाई को गांव में कुछ युवकों के पास सदिग्ध बैग होने की सूचना मिली थी। बैग की जांच करने पर उसमें एक मृत खरगोश मिला। आरोप है कि ग्रामीणों के

पहुंचते ही संबंधित युवक मौके से फरार हो गए। सूचना मिलने पर वाइल्डलाइफ विभाग की टीम मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। इसके बाद तीन व्यक्तियों के खिलाफ नामजद मामला दर्ज किया गया।

जैसी घटनाओं को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया

जाएगा और दोषियों को कड़ी सजा मिलनी चाहिए।

नीट, आईआईएसईआर में यदुवंशी शिक्षा निकेतन के विद्यार्थी छाए

हरिभूमि न्यूज़ ►►हांसी

यदुवंशी शिक्षा निकेतन के विद्यार्थियों ने नीट यूजी में और आईआईएसईआर प्रवेश परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय, अभिभावकों और क्षेत्र का नाम रोशन किया। इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में शनिवार को विद्यालय परिसर में सफल विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों और शिक्षकों के सम्मान में भव्य समारोह आयोजित किया गया। विद्यालय चेयरमैन राव बहादुर सिंह ने सफल विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि उनकी सफलता कड़ी मेहनत, अभिभावकों के सहयोग और शिक्षकों के समर्पित मार्गदर्शन का परिणाम है। उन्होंने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्रधानाचार्य पृथ्वी राज ने बताया कि विद्यालय में कक्षा तीसरी से ही विद्यार्थियों को प्रतियोगी



हांसी। नीट यूजी और आईआईएसईआर प्रवेश परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित करते स्कूल प्राचार्य पृथ्वीराज। फोटो: हरिभूमि

परीक्षाओं की वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित तैयारी कराई जाती है, जिसके सकारात्मक परिणाम लगातार सामने आ रहे हैं। नीट परीक्षा में विद्यालय के छात्र रोलनक ने 670 अंक हासिल कर ऑल इंडिया रैंक 527 तथा ईडब्ल्यूएस श्रेणी में रैंक 26 प्राप्त की। वहीं निशा ने 586 अंक, सलोनी ने 567 अंक और प्रॉजल ने 486 अंक प्राप्त कर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। विद्यालय की छात्रा आरती ने

आईआईएसईआर 2026 में ऑल इंडिया रैंक 258 हासिल कर विद्यालय और अपने क्षेत्र का नाम राष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया। विद्यालय के वाइस चेयरमैन एडवोकेट करण सिंह यादव ने विश्वास जताया कि आने वाले वर्षों में भी यदुवंशी शिक्षा निकेतन के विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय, प्रदेश और देश का गौरव बढ़ाते रहेंगे।

आरपीएस स्कूल में हुआ नीट और जेईई उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों का सम्मान

हरिभूमि न्यूज़ ►►हांसी

आरपीएस पब्लिक स्कूल में शनिवार को नीट एवं जेईई में उत्कृष्ट सफलता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों के सम्मान में समारोह आयोजित किया गया। विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान सफल विद्यार्थियों का फूल-मालाएं व पगड़ी पहनाकर तथा स्मृति-चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। समारोह में नीट परीक्षा (श्रेणी रैंक-29), आर्यन (श्रेणी रैंक-48), राहुल (श्रेणी रैंक-206), ईशा (श्रेणी रैंक-1367), अंतिम (श्रेणी रैंक-5014) तथा महक पानू (श्रेणी रैंक-7103) को सम्मानित किया गया। इसके साथ ही जेईई



हांसी। नीट यूजी व जेईई-मेन परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित करते स्कूल चेयरमैन संदीप देसवाल।

परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को भी सम्मान-चित्र भेंट कर सम्मानित किया गया। विद्यालय की प्राचार्या एकता सचदेवा ने सभी निरंतर कार्य कर रहा है। अनुभवी शिक्षकों को बधाई दी। विद्यालय के

निदेशक डॉ. संदीप देशवाल ने कहा कि आरपीएस पब्लिक स्कूल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं की उत्कृष्ट तैयारी के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन, नियमित

अभ्यास, आधुनिक शिक्षण पद्धति और अनुशासित वातावरण के कारण विद्यालय के विद्यार्थी नीट, जेईई, एनडीए, क्लैट सहित विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं।

ब्लू बेल्स स्कूल में लगा नेत्र जांच शिविर

हिसार। ब्लू बेल्स कॉन्वेंट स्कूल में विद्यार्थियों के बेहतर स्वास्थ्य और शैक्षणिक विकास को ध्यान में रखते हुए शुक्रवार को निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्देश्य विद्यार्थियों में आंखों से जुड़ी समस्याओं की समय रहते पहचान करना तथा उन्हें स्वस्थ दृष्टि के प्रति जागरूक बनाना रहा। शिविर में विशेषज्ञ नेत्र चिकित्सकों की टीम ने विद्यालय के सभी विद्यार्थियों की आंखों की विस्तृत जांच की। इस दौरान दृष्टि क्षमता, आंखों के सामान्य स्वास्थ्य और अन्य सम्बंधित समस्याओं का परीक्षण किया गया। जिन विद्यार्थियों में दृष्टि संबंधी समस्या पाई गई, उन्हें आगे विशेषज्ञ चिकित्सक से परामर्श और आवश्यक उपचार करने की सलाह दी गई। नेत्र विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को आंखों की नियमित देखभाल, संतुलित आहार, पर्याप्त रोशनी में अध्ययन, मोबाइल व अन्य डिजिटल उपकरणों का सीमित उपयोग तथा समय-समय पर नेत्र जांच कराने के महत्व के बारे में भी जागरूक किया। विद्यालय की प्राचार्या सुनीता रेड्डू ने बताया कि स्वस्थ विद्यार्थी ही उच्चतर भविष्य की नींव होते हैं। उन्होंने कहा कि विद्यालय समय-समय पर विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार के जनहित और स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करता रहेगा।



समस्याओं का नहीं हो रहा समाधान आज धरना देंगे सेक्टर-33 के लोग

हरिभूमि न्यूज़ ►►हिसार

सेक्टर-33 वासियों की शनिवार को बैठक हुई। बैठक में सेक्टर की लंबित समस्याओं के समाधान की मांग पर 19 जुलाई को रोष धरना देने का निर्णय लिया है। रेंजिडेंट सभा का कहना है कि 22 जून को एचएमवीपी प्रशासक को 15 सूत्रीय मांगपत्र सौंपे जाने के बावजूद करीब एक माह बीत जाने पर भी किसी भी मांग पर दोस कार्रवाई नहीं हुई, जिससे सेक्टरवासियों में भारी नाराजगी है।

रेंजिडेंट सभा के सदस्य राजपाल नैन, साधुराम भ्याण, देव भाटिया, विनोद गोयल, गौरव बंसल, सुबेदार मनोज कुंडू, मास्टर बलदेव बागला, जगदीश गोदारा, सुखपाल पटवारी एवं वारंट ऑफिसर ऋषिकेश ने बताया कि रेंजिडेंट सभा की वर्किंग कमेटी एवं मैनेजमेंट कमेटी की संयुक्त बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि यदि 18 जुलाई तक मांगों का समाधान नहीं हुआ तो 19



हिसार। सेक्टर-33 रेंजिडेंट्स की बैठक में उपस्थित सदस्य। फोटो: हरिभूमि

जुलाई को सेक्टर-14-33 डिवाइडिंग रोड स्थित श्री राम आईडियल स्कूल के समीप रोष धरना आयोजित किया जाएगा। सभा ने बताया कि धरने के दौरान आरक्षित स्थान पर नए बिजलीघर और नए वाटर वर्क्स के निर्माण, सीवरेज एवं बरसाती पाइपलाइन के मेनहोलों पर ढक्कन लगाने, आवारा पशुओं और कुत्तों की समस्या का समाधान, पेयजल आपूर्ति समेत अन्य मांगें प्रमुखता से उठाएंगी।

श्री योग दरबार परमहंस की कुटिया के शुभारंभ के मौके पर हुआ विशाल सत्संग

अपने अंदर के अहंकार का त्याग कर प्रेम भाव अपनाने वाला व्यक्ति ही वास्तव में महान होता है

बड़ा वही होता है जो झुकना जानता है : संत सुखदेवानंद महाराज

हरिभूमि न्यूज़ ►►उकलाना

श्री योग दरबार परमहंस की कुटिया के शुभारंभ एवं ध्वजारोहण (झंडा रस्म) के अवसर पर आयोजित विशाल सत्संग में धर्मगुरु संत सुखदेवानंद महाराज, संत कमलानंद महाराज एवं संत प्रेमानंद महाराज ने श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक एवं नैतिक जीवन का संदेश दिया। अपने प्रवचनों में संत सुखदेवानंद महाराज ने कहा कि बड़ा वही होता है जो झुकना जानता है। उन्होंने दही-बड़े का उदाहरण देते हुए कहा कि जब



उकलाना। प्रवचन देते संत और उपस्थित श्रद्धालु।

बड़ा दही में मिल जाता है तो वह और अधिक स्वादिष्ट तथा श्रेष्ठ बन जाता है। उसी प्रकार मनुष्य जब अपने भीतर के अहंकार को त्यागकर

निमग्नता और प्रेम का भाव अपनाता है, तभी वह वास्तव में महान बनता है। उन्होंने कहा कि सत्संग का उद्देश्य केवल प्रवचन सुनना नहीं, बल्कि

►► आश्रमों का निर्माण सहयोग से होता है

संत कमलानंद महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि आश्रमों का निर्माण संगत के सहयोग और समर्पण से होता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य जिस प्रकार की संगति करता है, उसके विचार और संस्कार भी उसी प्रकार बन जाते हैं। इसलिए सदैव अरुची संगत अपनानी चाहिए, क्योंकि अरुची संगति जीवन को सही दिशा देती है और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। कार्यक्रम के अंत में संत प्रेमानंद महाराज ने बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त करते हुए सभी के सुख, समृद्धि और मंगलमय जीवन की कामना की।

प्रेम, नम्रता और सेवा का भाव अपने जीवन में उतारना है। यदि मनुष्य अपने मन को परमात्मा के रंग में रंग ले, तो उसका जीवन सफल और

साथक हो जाता है। उन्होंने कहा कि आश्रम समाज को जोड़ने और आध्यात्मिक चेतना का प्रसार करने का माध्यम है।



हांसी। विद्यार्थी सदन के नवनिर्वाचित पदाधिकारी स्कूल प्राचार्या रेनु बंसल के साथ।

छात्र प्रतिनिधियों को बैज और सैश प्रदान कर सौंपी जिम्मेदारी

■ श्री सनातन धर्म कन्या विद्यालय में हुआ पद ग्रहण समारोह

हरिभूमि न्यूज़ ►►हांसी

श्री सनातन धर्म कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को विद्यार्थी सदन के गठन के लिए पदग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में नव-निर्वाचित छात्र प्रतिनिधियों को बैज और सैश प्रदान कर नेतृत्व की औपचारिक जिम्मेदारी सौंपी गई। विद्यालय की प्राचार्या रेनु बंसल ने बताया कि पदग्रहण समारोह विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, उत्तरदायित्व, सेवा भाव और टीमवर्क की भावना विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। उन्होंने कहा कि इस प्रक्रिया से छात्राओं में जिम्मेदारी निभाने और नेतृत्व कौशल का विकास होता है।

समारोह का शुभारंभ विद्यालय की हेड गर्ल राधिका (कक्षा 12वीं) तथा डिप्टी हेड गर्ल इशिता (कक्षा 11वीं) को पद एवं दायित्व सौंपने के साथ हुआ। इसके बाद चारों सदनों के छात्र प्रतिनिधियों को उनके पद

दी शुभकामनाएं

इस अवसर पर सभी नव-निर्वाचित पदाधिकारियों ने निष्ठा, अनुशासन, ईमानदारी और पूर्ण समर्पण के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने की शपथ व विद्यालय की गरिमा बनाए रखने तथा विद्यार्थियों के लिए आदर्श नेतृत्व प्रस्तुत करने का संकल्प भी लिया। समारोह के अंत में विद्यालय की प्राचार्या एवं प्रबंधक समिति के सदस्यों ने सभी नव-निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

सौंपे गए। गंगा हाउस की कैप्टन अंशुल, वाइस कैप्टन अनुष्का, स्पोर्ट्स कैप्टन भावना तथा प्रीफेक्ट मुस्कान, कृष्णा हाउस की कैप्टन खुरशू, वाइस कैप्टन परी, स्पोर्ट्स कैप्टन वंशिका तथा प्रीफेक्ट निकिता; सतलुज हाउस की कैप्टन जानवी, वाइस कैप्टन यशिका, स्पोर्ट्स कैप्टन सुटि तथा प्रीफेक्ट रश्मि; जबकि व्यास हाउस की कैप्टन हितांशी, वाइस कैप्टन नंदिनी, स्पोर्ट्स कैप्टन जानवी दहिया तथा प्रीफेक्ट प्राची को उनके दायित्व सौंपे गए।



हिसार। शपथ ग्रहण एवं पदक अलंकरण समारोह।

प्रधानाचार्या मंजु सुधाकर के साथ विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

दिल्ली पब्लिक स्कूल में हुआ शपथ ग्रहण समारोह

हिसार। दिल्ली पब्लिक स्कूल में सत्र 2026-27 के लिए छात्र परिषद के शपथ ग्रहण एवं पदक अलंकरण समारोह का गरिमामय आयोजन किया गया। समारोह में विद्यालय प्रधानाचार्या मंजु सुधाकर ने नवनिर्वाचित छात्र परिषद के पदाधिकारियों एवं सदन प्रतिनिधियों को पदक पहनाकर सम्मानित किया तथा उन्हें अपने पद की गरिमा बनाए रखते हुए विद्यालय के आदर्शों, अनुशासन और मूल्यों के प्रति सदैव समर्पित रहने की शपथ दिलाई। इस अवसर पर हेड बॉय मुकुल रजन, हेड गर्ल रश्मिता चौधरी, डिप्टी हेड बॉय इशमोत सिंघा, डिप्टी हेड गर्ल आहाना मक्कड़, विजयंती लीडर बॉय अर्पव नेहरा, विजयंती लीडर गर्ल कनिष्का, स्पोर्ट्स कैप्टन बॉय जीवन, स्पोर्ट्स कैप्टन गर्ल हर्षल हरदीप चौधरी, डिप्टी स्पोर्ट्स कैप्टन बॉय वंश, डिप्टी स्पोर्ट्स कैप्टन गर्ल मुक्ता, सीसीए इवार्ज बॉय आरनव सिंह, सीसीए इवार्ज गर्ल यशिका, टेक विजार्ड बॉय अमय, टेक विजार्ड गर्ल गर्विता, डिजिटलिन स्टूडेंट्स बॉय केदार सिंह तथा डिजिटलिन स्टूडेंट्स गर्ल मन्नात ने शपथ ग्रहण की। इसी क्रम में आर्यभट्ट सदन के हाउस कैप्टन अरमान एवं हाउस कैप्टन (गर्ल) खुशी, भास्कर सदन के हाउस कैप्टन गितेश एवं हाउस कैप्टन (गर्ल) दिव्या, चाणक्य सदन के हाउस कैप्टन परान एवं हाउस कैप्टन (गर्ल) जाह्नवी तथा पाणिनि सदन के हाउस कैप्टन परवांश शर्मा एवं हाउस कैप्टन (गर्ल) रश्मि रावत ने भी अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने की शपथ ली।



चश्मे के बढ़ते नंबर पर लगेगी लगान

हिसार। बरवाला रोड स्थित आई क्यू सुपर आई हरिपटल में शनिवार को आई क्यू के पहले समर्पित मायोपिया क्लिनिक का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर आई क्यू हरियाणा के रीजनल मेडिकल डायरेक्टर डॉ. गौरव गोयल मुख्य रूप से उपस्थित रहे। उनके साथ डॉ. युविका बंसल, डॉ. मैथिली कामन और डॉ. नीलम चौधरी ने भी बच्चों में तेजी से बढ़ रही मायोपिया की समस्या, संरक्षण पर जांच और आधुनिक उपचार की आवश्यकता पर अपने महत्वपूर्ण विचार

साझा किए। डॉ. गौरव गोयल ने बताया कि बच्चे कक्षा में ब्लैकबोर्ड साफ नहीं देख पाते, जिससे उन्हें पढ़ाई में कमजोर मान लिया जाता है, जबकि लैंग्वीज बॉय एवं गैर लैंग्वीज बॉय दोनों में होने वाले मोरियाबिंद या ग्लूकोमा के खतरे को रोकना जा सकता है। इस क्लिनिक में बच्चों के इलाज के लिए एफडीए-अनुमोदित मायोपिया कंट्रोल लेंस और रात में पहने जाने वाले विशेष ऑर्थो-के लेंस जैसी तकनीकें उपलब्ध कराई जा रही हैं।

ऑपरेशन मेघदूत के दौरान देश के लिए हो गए थे शहीद, बलिदानी की भव्य प्रतिमा भी लगाई जाएगी

36 साल का इंतजार खत्म, खांडा खेड़ी के बलिदानी भरत सिंह की याद में बनेगा स्मारक

■ साल 1979 में दसवीं पास करते ही वह सेना में शामिल हो गए थे

हरिभूमि न्यूज ॥ नारनौद

ऑपरेशन मेघदूत के दौरान देश के लिए शहीद हुए जवान भरत सिंह के परिजनों की 36 साल की लंबी गुहार के बाद आखिरकार सरकार और प्रशासन जागा है। प्रशासन ने गांव के बस स्टैंड पर बलिदानी के सम्मान में एक भव्य बलिदान स्मारक बनाने की शुरुआत कर दी है, जिससे बलिदानी की पत्नी मीना और पूरे परिवार के चेहरे पर आज सुकून की मुस्कान है।

खबर संक्षेप

खाटू श्याम व सालासर बस यात्रा 25 को

आदमपुर। हिसार, आदमपुर, भटू व आसपास के भक्तों के लिए एकादशी पर शनिवार 25 जुलाई को 99वीं खाटू श्याम सालासर बालाजी बस यात्रा का आयोजन किया जाएगा। समिति के अध्यक्ष अमित गोयल व मुकेश गोयल ने बताया कि यात्रा में श्रद्धालु खाटू श्याम, सालासर बालाजी व कालिका माता मंदिर के दर्शन करेंगे। इसके अलावा अगस्त माह में उज्जैन-सीहोर पारिवारिक बस यात्रा रवाना होगी। जाने के लिए आदमपुर में श्री श्याम लाइब्रेरी या कमेटी सदस्यों से संपर्क कर सकते हैं।

काली फिल्म लगी स्कॉरपियों का किया चालान हिसार। थाना ट्रैफिक की टीम ने राष्ट्रीय राजमार्ग-52 (राजगढ़-अम्बाला रोड) पर कार्रवाई करते हुए काली फिल्म लगी एक स्कॉरपियो गाड़ी का 10 हजार का चालान किया। थाना ट्रैफिक प्रभारी निरीक्षक चन्द्रमान ने बताया कि उनकी टीम एनएच-52 पर यातायात चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान काले रंग की स्कॉरपियो को जांच के लिए रोका गया। निरीक्षण के दौरान वाहन के शीशों पर नियमों के विरुद्ध काली फिल्म लगी हुई पाई गई। मोटर वाहन अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार वाहन चालक के विरुद्ध मौके पर ही 10 हजार का चालान किया।

नागरिक अधिकार मंच का पहला सम्मेलन 26 को

हिसार। शहर में लगातार बढ़ रही फिरीती, गुंडागर्दी और मर्डे की वारदातों के खिलाफ प्रबुद्ध नागरिकों ने एक स्थाई व सशक्त मंच 'नागरिक अधिकार मंच हिसार' का गठन किया है। गत 13 जून को पंजाबी धर्मशाला में हुई बैठक में 11 सदस्यीय एक्जिक्यूटिव कमेटी बनाई गई थी। अब आगामी 26 जुलाई पंजाबी धर्मशाला में मंच का पहला नागरिक सम्मेलन आयोजित किया जाएगा, जिसमें जनता के समक्ष सामूहिक मांग पत्र और मंच का संविधान रखा जाएगा। इस सम्मेलन में हिसार शहर के सभी नागरिकों का सामूहिक मांग पत्र और मंच का संविधान नागरिकों के समक्ष रखा जाएगा, और उनकी सहमति पर ही नागरिक अधिकार मंच हिसार की स्थाई कमेटी का चयन किया जाएगा। सम्मेलन में हिसार डिवीजन के पूर्व कमिश्नर अशोक कुमार गर्ग और यूको बैंक के पूर्व सीनियर मैनेजर ओम प्रकाश होगे। मंच के कमेटी सदस्य अनिल शर्मा व नरेश गौतम ने शहर में लगातार बढ़ रही फिरीती की वजहों पर अगर पहले कोई ठोस कार्रवाई की गई होती, तो अभी फिर वलांथ मार्केट के व्यापारी से फोन पर पांच करोड़ की फिरीती की धमकी ना आती। कमेटी के सदस्य त्रिलोक पंसल व मंगल दालिया ने बताया कि शहर में घने का स्वच्छ पानी और सफाई व्यवस्था को लेकर पक्षिक हेल्थ विभाग तथा नगर निगम के पास कोई ठोस नीति नहीं है। कमेटी के सदस्य अनु सुरा दीगर, अशोक असीजा व होशियार खान ने बताया कि सम्मेलन में बिजली की लटकती तारें, स्मार्ट मीटर और शहर में बंद किए गए सरकारी स्कूलों पर भी चर्चा होगी।

महाराजा रणजीत सिंह सोसायटी ने प्रतिभाशाली बच्चों को किया सम्मानित



हांसी। महाराजा रणजीत सिंह वेलफेयर सोसायटी की ओर से शनिवार को जाट धर्मशाला में सांसी समाज के उत्थान व समाज के प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित करने के लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समाज के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित करने के साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन और समाज को संघटित करने पर विस्तार से चर्चा की गई। समारोह में दसवीं और बारहवीं कक्षा में 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। वहीं डॉ. इंंदर सिंह माहला को समिति के सदस्य के रूप में शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर राजकुमार, बलबीर, राकेश, वेद प्रकाश, गुरुदेव सिंह, रमेश्वरी सिंह, रमेश कुमार सहित काफी संख्या समाज के अनेक गणमान्य आदि उपस्थित थे।

हथियार उपलब्ध कराने वाला हिस्ट्रीशीटर काबू

हिसार। अपराधियों एवं अवैध हथियारों के नेटवर्क के खिलाफ चलाए जा रहे विदेश अभियान के तहत 12 वारंट पुलिस चौकी की टीम ने हथिया प्रयास के एक मामले में आरोपियों को अवैध हथियार उपलब्ध कराने वाले हिस्ट्रीशीटर को गिरफ्तार किया है। एसएसआई राकेश कुमार ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी की पड़चान महाबीर कॉलोनी निवासी आशीष उर्फ अशोक के रूप में हुई है। जांच में सामने आया है कि आरोपी ने हथिया प्रयास के मामले में शामिल आरोपियों को वारदात में इस्तेमाल करने के लिए अवैध हथियार उपलब्ध करवाया था।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार

फोन : 9988272916, 9315429403, 9253681005

जिला परिषद की ग्रांट से बन रहा स्मारक

बलिदानी के बेटे सदीप ने बताया कि वह पिछले 12 सालों से खुद इस स्मारक को बनवाने की लड़ाई लड़ रहे थे। अब जाकर एसडीएम विकास यादव ने जिला परिषद की ग्रांट से इस काम को अंतिम रूप देकर इसकी शुरुआत करवाई है। वहीं, बलिदानी की पत्नी मीना ने भावुक होते हुए कहा कि वह पिछले 36 सालों से इस लंबी लड़ाई की गवाह रही हैं। आखिरकार एक ईमानदार प्रशासनिक अधिकारी ने इस कार्य को अमलीजामा पहनकर हमारे आसू पोंछने का काम किया है।



18 लाख की लागत से 600 गज में बनेगा भव्य पार्क और स्मारक बलिदानी भरत सिंह के सम्मान के लिए परिवार पिछले साढ़े तीन दशकों से सरकारी दफ्तरों और नेताओं के चक्कर काट रहा था। करीब चार साल पहले गांव के सरकारी स्कूल का नाम उनके नाम पर रखा गया था। अब, 36 साल बाद बस स्टैंड पर 18 लाख रुपये की लागत से भव्य स्मारक का निर्माण शुरू हुआ है। इसके लिए गांव की पंचायत ने 600 गज जमीन दी है, जहां बलिदानी भरत सिंह की प्रतिमा (स्टैच्यू), लाइटिंग, चारदीवारी और एक सुंदर पार्क का निर्माण किया जा रहा है।

बेटी विदेश में व बेटा सरकारी नौकरी पर

शहादत के वक्त भरत सिंह अपने पीछे पत्नी मीना, 3 साल की बेटी रेनु और महज डेढ़ साल के बेटे सदीप को छोड़ गए थे। गुहिलों पत्नी मीना ने जीवन के इस सबसे कठिन दौर में भी हिम्मत नहीं हारी और बच्चों को अच्छे संस्कार देकर पाला-पोसा। आज उनकी परवरिश का ही नतीजा है कि बेटी रेनु विदेश में सेटल है और बेटा सदीप उपमंडल कार्यालय में कार्यरत है।

बलिदानी की पत्नी के चेहरे अब झलकी खुशी



नारनौद। बलिदानी की पत्नी मीना अपने बेटे सदीप के साथ।

पुलिस से धक्का-मुक्की, 21 को वार्ता का न्योता मिलने पर टला आंदोलन

पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल वर्कर्स यूनियन का मांगों को लेकर हल्लाबोल प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ॥ हिसार

सर्व कर्मचारी संघ से संबंधित हरियाणा गवर्नमेंट पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल वर्कर्स यूनियन ने अपनी लंबित मांगें उठाते हुए शक्ति प्रदर्शन किया। इस दौरान कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा के आवास की ओर बढ़ रहे कर्मचारियों को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन ने बैरिकेडिंग की। पुलिस के साथ धक्का-मुक्की के बीच प्रदर्शनकारी कर्मचारी बॉटेकट्स को हटाते हुए आगे बढ़ गए और धरने पर बैठ गए। प्रदर्शन के दौरान जब कर्मचारी मंत्री रणबीर सिंह गंगवा के कैप कार्यालय पहुंचे तो मंत्री के पुत्र संजीव गंगवा ने यूनियन के प्रतिनिधिमंडल को 21 जुलाई को वार्ता के लिए आमंत्रण पत्र सौंपा। पत्र के अनुसार बैठक में लोक निर्माण एवं जनस्वास्थ्य विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिवों के साथ संबंधित विभागों के प्रमुख अभियंता भी मौजूद रहेंगे और कर्मचारियों की मांगों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। इस पर कर्मचारियों ने अपना आंदोलन स्थगित कर दिया।



हिसार। मांगों को लेकर प्रदर्शन करते पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल वर्कर्स यूनियन के सदस्य तथा कैबिनेट मंत्री के आवास पर सरकार के खिलाफ गुस्सा निकालते कर्मचारी नेता।

लंबित मांगों पर अनदेखी का आरोप

इससे पूर्व सर्व कर्मचारी संघ हरियाणा के आह्वान पर प्रदेश के विभिन्न जिलों से हजारों कर्मचारी शनिवार को सेक्टर-15 स्थित कम्प्यूटिटी सेंटर में एकत्रित हुए। सभा के बाद कर्मचारियों ने कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा के कैप कार्यालय की ओर मार्च करते हुए सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और कर्मचारियों से किए गए वादे जल्द पूरे करने की मांग उठाई। सरकार पर लंबित मांगों को लेकर अनदेखी का आरोप लगाया। प्रदर्शन की अध्यक्षता यूनियन के राज्य प्रधान गंगाराम मौग ने की, जबकि संवाहन राज्य महासचिव जखन सिंह ने किया। जिला प्रधान ओमप्रकाश माल, जिला सचिव दीपक मेहरा और अन्य पदाधिकारियों ने प्रदेशभर से पहुंचे कर्मचारियों का स्वागत किया।

इन मांगों को लेकर सड़क पर उतरे कर्मचारी

प्रदर्शनकारी कर्मचारियों ने एचकेआरएनएल, टर्म अपोइंटेड और डेलीवेज कर्मचारियों को नियमित करने, नियमितीकरण तक समान काम के लिए समान वेतन लागू करने, रेशनलाइजेशन के नाम पर समाप्त किए गए ग्रुप-सी और ग्रुप-डी के पद बहाल करने, मैकेनिकल विंग और क्वालिटी कंट्रोल यूनिट को यथावत रखने, नए पद सृजित करने, विभागीय पदेननितियां देने, एलटीसी मेडिकल और यात्रा बिलों का मुग्तान, कैशलेस मेडिकल सुविधा, जोखिम भता और एक्स-ग्रेडिंग नीति में संशोधन सहित कई मांगें सरकार के सामने रखीं।

ये रहे मौजूद

प्रदर्शन में सर्व कर्मचारी संघ हरियाणा के राज्य कोषाध्यक्ष सुरेंद्र यादव, राज्य कोषाध्यक्ष राहुल हुड्डा, वरिष्ठ उपप्रधान अजय कुमार, उप महासचिव राजेश धनखड़, मुख्य संगठनकर्ता योगेश शर्मा, उप कोषाध्यक्ष हितेश शर्मा, प्रेस सचिव सदीप राठी, उपप्रधान राकेश तंवर, वरिष्ठ उपप्रधान अफलातून जाखड़, उपप्रधान शिव कुमार धानक, सुरजमान जटासरा सहित प्रदेशभर से बड़ी संख्या में कर्मचारी और पदाधिकारी मौजूद रहे।

अधिवक्ता परिषद ने लगाया रक्तदान शिविर

हांसी। बार एसोसिएशन एवं अधिवक्ता परिषद के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को बार एसोसिएशन परिसर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अधिवक्ताओं एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने रक्तदान कर मानव सेवा का संदेश दिया। इस अवसर पर रक्तदान करने को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए मोमेंट, मेडल, प्रशस्ति-पत्र एवं अल्पाहार प्रदान कर सम्मानित किया गया। बार एसोसिएशन एवं अधिवक्ता परिषद के पदाधिकारियों ने सभी रक्तदाताओं, चिकित्सकों, मेडिकल टीम एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रहा रोज सदन

उकलाना। आरडीएम सरस्वती पब्लिक स्कूल में कक्षा पहली एवं दूसरी के विद्यार्थियों के लिए अंतरसदनीय कंप्यूटर विज्ञान प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में रोज सदन ने प्रथम स्थान प्राप्त कर विजेता बने का गौरव हासिल किया। लिली सदन एवं लोटस सदन ने संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान प्राप्त किया, जबकि जैरिम सदन ने तृतीय स्थान हासिल किया। विद्यालय परिवार की ओर से विजेता विद्यार्थियों को बधाई दी गई तथा सभी प्रतिभागियों के उत्साह, प्रयास और उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की गई। इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक डॉ. केंसी शर्मा ने बच्चों को निरंतर सीखने और आधुनिक तकनीकों से जुड़कर अपने ज्ञान का विस्तार करने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय की प्राचार्या डॉ. शालू एस. कटारिया ने विजेता विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दीं।



बिना निष्पक्ष जांच चार्जशीट जारी करना अनुचित: अनिल

हरिभूमि न्यूज ॥ हिसार

हरियाणा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ की जिला इकाई ने स्वास्थ्य विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव की ओर से जिला के सिविल सर्जन सहित आठ वरिष्ठ स्वास्थ्य अधिकारियों के विरुद्ध हरियाणा सिविल सेवा (दंड एवं अपील) नियम, 2016 के नियम-8 के तहत चार्जशीट जारी करने की प्रक्रिया शुरू करने के निर्देशों का कड़ा विरोध किया है। संघ ने इस कार्रवाई को एकतरफा बताते हुए इसकी निष्पक्ष समीक्षा की मांग की है। जिला अध्यक्ष अनिल कुमार व प्रदेश महामंत्री जगत बिसला ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी सीमित संसाधनों, बढ़ते कार्यभार और



लगातार बढ़ती जिम्मेदारियों के बावजूद प्रदेश की जनता को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए दिन-रात कार्य कर रहे हैं। ऐसे समय में सभी तथ्यों का समुचित मूल्यांकन किए बिना वरिष्ठ अधिकारियों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू करना पूरे विभाग के मनोबल को प्रभावित करेगा। प्रदेश महामंत्री जगत बिसला ने बताया कि यह कार्रवाई पिछले वर्ष राज्य मुख्यालय से आई सार्वक टीम द्वारा निरीक्षण के दौरान बताई गई कमियों के आधार पर की जा रही है। उन्होंने कहा कि जिन अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई प्रस्तावित है, उनमें से कुछ ने संबंधित संस्थानों का कार्यभार सार्वक टीम के निरीक्षण से महज 10 से 15 दिन पहले ही संभाला था।

उज्जवल भविष्य

यंग प्रोफेशनल से ग्रेजुएट इंजीनियर ट्रेनी तक का हुआ चयन

एचएयू के 17 विद्यार्थियों को प्रतिष्ठित संस्थानों में मिली नौकरी

हरिभूमि न्यूज ॥ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने एक बार फिर अपने उत्कृष्ट प्लेसमेंट रिकॉर्ड को कायम रखते हुए 17 विद्यार्थियों का देश के प्रतिष्ठित संस्थानों और कॉर्पोरेट कंपनियों में चयन कराया है। विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय के अंतर्गत संचालित काउंसिलिंग एवं प्लेसमेंट सेल द्वारा आयोजित हालिया प्लेसमेंट अभियान में विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर मिले हैं। महिंद्रा एंड महिंद्रा के साक्षात्कार पूरे हो चुके हैं, जबकि इंडसैंड बैंक और ट्राइडेंट ग्रुप की चयन प्रक्रिया अंतिम चरण में है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.

बीआर काम्बोज ने चयनित विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि केवल विद्यार्थियों की मेहनत और प्रतिभा का परिणाम नहीं, बल्कि विश्वविद्यालय में उपलब्ध गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, व्यावहारिक प्रशिक्षण और उद्योगों से मजबूत समन्वय का भी प्रमाण है। प्लेसमेंट अभियान के तहत हरियाणा स्टेट रूरल लाइवलीहुड मिशन (एचएसआरएलएम) ने सात विद्यार्थियों अक्षय कुमार, मेघा चौधरी, निधि सांगवान, राहुल मलिक, रिया, साहिल और सहूद खान का यंग प्रोफेशनल पद पर 35 हजार रुपये प्रतिमाह मानदेय पर चयन किया है। जगजीत ग्रुप ने कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय के



हिसार। चयनित विद्यार्थियों के साथ कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

फोटो: हरिभूमि

संजना, नयता त्रिवेदी, विशाल, दीक्षा और नितिन यादव को ग्रेजुएट इंजीनियर ट्रेनी के रूप में नियुक्त किया है। इसके अलावा बेरी उद्योग ने नवीन और अजय, टैफे ने हर्ष रघुवंशी एवं प्रतीक तिवारी तथा एस्कॉर्ट्स कुबोटा ने गरिमा का चयन किया है।

छात्र कल्याण निदेशक डॉ. मदन लाल खीचड़ ने बताया कि काउंसिलिंग एवं प्लेसमेंट सेल विद्यार्थियों को उद्योग जगत की जरूरतों के अनुरूप तैयार करने, कौशल विकास, करियर काउंसिलिंग और रोजगार उपलब्ध कराने की

दिशा में लगातार कार्य कर रहा है। सह-निदेशक छात्र कल्याण डॉ. सुबोध अग्रवाल ने बताया कि पिछले शैक्षणिक सत्र में भी सेल के प्रयासों से 53 विद्यार्थियों का विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों में चयन हुआ था।

पिछले शैक्षणिक सत्र में 53 विद्यार्थियों का चयन हुआ था

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल दीगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल, कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अजय कुमार वशिष्ठ तथा प्लेसमेंट कोऑर्डिनेटर डॉ. मुकेश जैन भी उपस्थित रहे।

एक समय तक रोजमर्रा की आपा-धापी, दुख और तनाव को दूर करने के लिए लापटर क्लब्स को कारगर माना जाता था। लेकिन हाल के वर्षों में दुख-अवसाद से राहत दिलाने में क्रायिंग क्लब को ज्यादा कारगर माना जाने लगा है। इसीलिए विदेशों में ही नहीं अपने देश में भी इसका ट्रेंड बढ़ रहा है। ये क्रायिंग क्लब कैसे दुखों से राहत दिलाते हैं, यहां बता रहे हैं विस्तार से।

क्राइंग क्लबों का बढ़ता ट्रेंड मिलकर रोने से-दुःख हो जाए कम



कवर स्टोरी / शाहिद ए. चौधरी

एक दिन सुबह चहलकदमी करने के दौरान मैंने पार्क के एक कोने में कुछ बुजुर्गों को एक सुर में जोर-जोर से हसते हुए देखा। अपने-अपने दुःखों को दूर करने, डिप्रेशन से बचे रहने और अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाने का उनका यह तरीका है। बीते कई वर्षों से दुनिया भर में हंसी को सबसे अच्छी दवा मानकर उसे अगुआने का ट्रेंड काफी पॉपुलर हो चुका है। यह देखकर अच्छा लगा। लेकिन संयोग रहा कि जब पार्क से घर लौटा तो दुःखद समाचार मिला कि पड़ोस में रहने वाले एक व्यक्ति को दिल का दौरा पड़ने से डेथ हो गई। मैं शोक व्यक्त करने के लिए उनके घर पहुंचा तो देखा कि गुमसुम बैठी मुतक की पत्नी को अनेक महिलाएं रूलाने का प्रयास कर रही हैं और उनमें से एक को मैंने यह कहते हुए सुना, ‘अरे, इन्हें रूला दो, कुछ तो गम गलत होगा, वरना सदम की वजह से डिप्रेशन में चली जाएंगी।’ इन दोनों घटनाओं से मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि मनुष्य के लिए अपने और रोने दोनों का बहुत अधिक महत्व है। वैसे भी कुदरत ने ये दोनों गुण इंसानों को ही दिए हैं। चोट लगने पर जानवर चिल्लाते अवश्य हैं, लेकिन इंसानों की तरह रोते नहीं हैं।



लापटर मैन से बने क्रायिंग मैन

लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने कमलेश मसाला वाला को ‘पहला लापटर टीचर’ घोषित किया था। तकरीबन आठ साल पहले उन्होंने तय किया कि लोगों को 25 साल तक बहुत हंसा लिया, अब उन्हें रूलाया जाए और उन्होंने ‘हल्की क्रायिंग क्लब’ की स्थापना सबसे पहले गुजरात के सूरत में की। गौरवलाभ है कि 2008 में मसाला वाला ने इंटरनेशनल लापटर योग कांफ्रेंस के दौरान अचिरल रोने की प्रतियोगिता जीती थी। उन्होंने अपनी दिवंगत माता को याद करके एकदम से रोना शुरू कर दिया था। बाद में उन्हें एहसास हुआ कि भावनात्मक आंसुओं में भी मेडिकल लाभ होते हैं। अब तो कई स्टडीज में सामने आया है कि जब हम दुःख, तनाव या कंटा की वजह से रोते हैं तो हमारा शरीर कोर्टिसोल स्ट्रेस हार्मोन उत्पन्न करता है। हंस्ने से जो आंसू निकलते हैं, उनमें यह हार्मोन नहीं होता है। यानी सुकून महसूस करने के लिए हंसी के साथ आंसू भी जरूरी हैं।

रोने के लिए बन रहे क्लब

आमतौर पर रोने को कमजोरी की निशानी मान लिया जाता है। शायद तभी सुदर्शन फाकिर ने अपने एक शेर में कहा है, ‘आप कहते थे कि रोने से न बदलेंगे नसीब/उम्र भर आपकी इस बात ने रोने न दिया।’ यह कहा भी भले ही जाता हो कि मदद को दर्द नहीं होता या मदद रोते नहीं हैं। लेकिन आज दुनिया भर के डॉक्टरों इस बात को स्वीकार करते हैं कि रोने से मन हल्का होता है और कुछ लोगों के साथ मिलकर रोने से दुःख से राहत महसूस होती है। इसलिए देश के कई शहरों में क्रायिंग क्लब खुल रहे हैं। देश-समाज का यह नवीनतम सामूहिक संस्कार है, जिसमें हंसी की जगह आंसुओं ने ले ली है। इनमें व्यक्ति उस समय तक रो सकता है, जब तक उसके दिल का बोझ हल्का न हो जाए और वह



जिंदगी की नई शुरुआत करने के लिए तैयार न हो जाए।
काफ़ी लोग हो रहे शामिल
क्राइंग क्लब, दशकों पुराने लापटर क्लबों का जवाब-सा प्रतीत हो रहे हैं। मुंबई, दिल्ली, बैंगलुरु और हैदराबाद में लोग कॉफी शॉप्स, पब्स में आयोजित होने वाले क्रायिंग सेशन में शामिल हो रहे हैं। सूरत में तो ‘हल्दी क्रायिंग क्लब’ को चलते हुए अब आठ वर्ष हो गए हैं, जिसके सदस्य हर माह के अंतिम रविवार को एकत्र होते हैं और जी भरकर रोते हैं।
ऐसे हुई क्रायिंग क्लब की शुरुआत
सबसे पहले टोक्यो (जापान) के हिरोकी तेराई ने ग्रुप थेरेपी के तौर पर वर्ष 2013 में रुक कत्सू (आंसू बहाना) आरंभ किया। पहले तेराई, तलाक समारोह आयोजित करने के लिए विख्यात थे, जिसमें पूर्व जोड़े अपनी शादी की अंगुठी पर हथोड़े मारते थे ताकि अपने अतीत के बोझ से मुक्त हो सकें। तेराई ने बाद में आक्रामकता को खत्म करते हुए इसका एक कोमल रूप विकसित किया, जिसमें हल्की रोशनी में भावनात्मक फिल्में देखी जाती हैं। आपसी सहमति से एक-दूसरे को खाना खिलाते हैं और क्रायिंग सेशन में लोग हिस्सा लेते हैं। अपने देश में ‘स्मॉल वर्ल्ड’ (डिजिटल से इतर रियल सोशल कनेक्शन को प्रमोट करने वाली संस्था) के संस्थापक सौरव आर्य ने क्रायिंग क्लब लॉंच किया। इसे शुरू करने के पीछे उनका तर्क यह था कि ‘ऑनलाइन दोस्तों से घिरे रहने के बावजूद लोग अकेलापन महसूस कर रहे हैं।’ इस क्लब के सत्र प्राइवेट कैफे व पब्स में आयोजित किए जाते हैं, जिनमें दोस्त के लिविंग रूम जैसा एहसास होता है। सेशन में सभी को बोलना जरूरी नहीं होता। बहुत से लोग दूसरों की सफ़ि सुनते हैं। सुनते हुए ही उसके दर्द को सुनकर या अपना दर्द यादकर वे रोने लगते हैं। सत्र में पुरुष और महिलाएं सभी भाग लेते हैं। आमतौर पर इसमें 20-40 वर्ष के लोग आते हैं।

रोने की विभिन्न वजहें

अमेरिका में रहने वाले 45 वर्षीय रमेश, मुंबई लौटे थे। वह ग्रुप एक्टिविटी की तलाश करते हुए एक ऐसी जगह पहुंच गए, जिसकी उन्हें उम्मीद भी न थी। एक क्रायिंग क्लब, जिसका आयोजन मुंबई के एक बार में हो रहा था, जो उन्हें दिलचस्प लगा, विशेषकर इसलिए कि उन्हें भी अपनी कुछ भावनाओं से मुक्ति पानी थी। रमेश को वह जगह नकारात्मक भावना दूर करने से अधिक संपर्क स्थापित करने वाली अधिक लगी, क्योंकि उनकी वहां ऐसे लोगों से बॉन्डिंग बनी, जो अपनी नकारात्मक भावनाओं से जूझ रहे थे। सच यही है कि ऐसे क्लबों में आने वाले लोगों के रोने के विविध कारण हो सकते हैं- ब्रेकअप, जीवन में

अनपेक्षित परिवर्तन या नुकसान। अनाम थकान जिसे शब्दों में व्यक्त न किया जा सके। एक लड़की तो रोने के लिए केवल इसलिए क्रायिंग क्लब में पहुंची कि उसने पांच दिन से किसी से बात ही नहीं की थी। उसे अपने गुमनाम होने का एहसास हो रहा था। उसने सत्र में दो नए दोस्त बनाए। सत्र में शामिल होने की एक व्यक्ति ने यह वजह बताई, ‘मुझे राहत नहीं चाहिए। मुझे तो बस वह जगह चाहिए, जहां मेरी उदासी को बरकरार रहने का अवसर मिले।’

सच यह है कि अलग-अलग स्थानों और परिवेश के लोग अलग-अलग तरह से रोते हैं। महानगरों में लोग बर्नआउट और अकेलेपन की वजह से रोते हैं। छोटे शहरों में रहने वाले लोग अक्सर पारिवारिक या सामाजिक दबाव के कारण रोते हैं। ऐसे क्लबों में एक बार जब रोना बंद हो जाता है, तो आपसी समानुभूति का संपर्क स्थापित होना शुरू हो जाता है। लोग नए संपर्क और मुस्कान लेकर लौटते हैं। *

भूटान, ग्लोबल कंषेशन डिवेलोपेशन (जीसीडी) पर हस्ताक्षर करने वाला पहला देश बना है। क्या है यह डिवेलोपेशन और किस तरह समाज की चुनौतियों से निपटने में यह सहायक हो सकता है? इसके साथ ही कुछ ज्वलंत सवालों पर नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने साझा किए अपने विचार।



दूसरे की तकलीफ को अपनी पीड़ा की तरह महसूस करने से जन्मती है करुणा की शक्ति

विशिष्ट अभिव्यक्ति / कैलाश सत्यार्थी

हाल ही में हमारे पड़ोसी देश भूटान ने ग्लोबल कंषेशन डिवेलोपेशन (जीसीडी) पर हस्ताक्षर किया है। ग्लोबल कंषेशन डिवेलोपेशन, एक महत्वपूर्ण, अनूठा दस्तावेज है। पिछले साल सितंबर में संयुक्त राष्ट्र संघ के महाधिवेशन में सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कंषेशन ने मोनाको देश की सहभागिता में एक विशेष बैठक आयोजित किया, जो करुणा के वैश्वीकरण से शासन तंत्र को करुणामय बनाने के विचार से आयोजित किया गया था। उस उच्च स्तरीय बैठक में राष्ट्राध्यक्ष, संयुक्त राष्ट्र संघ के वरिष्ठ अधिकारी, नोबेल पुरस्कार विजेता और मानवाधिकार कार्यकर्ता शामिल हुए थे। इसमें संवाद के बाद जो सहमति बनी, वह एक घोषणापत्र के रूप में सामने आई, जिसमें सबसे बड़ी बात यह थी कि उन्होंने करुणा की हमारी बदली परिभाषा को स्वीकार किया। सामान्य तौर पर करुणा को एक नाजुक भाव मान लिया जाता है। हमारी परिभाषा में करुणा वह शक्ति है, जो दूसरे की तकलीफ को अपनी पीड़ा की तरह महसूस करने से जन्मती है और उसके समाधान की प्रेरणा शक्ति बनती है। इसी के आधार पर समाज के हर क्षेत्र में विवेकपूर्ण समाधान की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए यह घोषणापत्र तैयार हुआ। भूटान पहला देश है, जिसने इसे अनुमोदित किया और वहां के प्रधानमंत्री ने इस पर हस्ताक्षर किया। बाद में एक अन्य छोटे से देश तिमोर लेस्ते ने भी हस्ताक्षर किया।

विकसित करना होगा करुणामय नेतृत्व: आज जब समाधानकर्ताओं और पीड़ितों के बीच खाई चौड़ी होती चली जा रही है, तब यह आवश्यक है कि शासन व्यवस्था, शिक्षा, चिकित्सा, न्याय, मीडिया आदि में करुणामय नेतृत्व विकसित किया जाए। इसका अर्थ यह हुआ कि इन सभी संस्थाओं या क्षेत्रों में लोग दूसरे की समस्याओं को अपना समझकर उसके निपटान के लिए नेतृत्व करें। यह काम लगातार व्यावहारिक प्रशिक्षण संवाद और अनुभवजनित ज्ञान जैसे प्रयोगों से संभव है। ऐसे कुछ वैज्ञानिक शोध हुए हैं, जिनसे साबित हुआ है कि अस्पतालों में चिकित्साकर्मियों के करुणजनित व्यवहार के परिणामस्वरूप मरीजों का जल्दी और प्रभावशाली उपचार हो सका। इसी तरह कॉर्पोरेट जगत में करुणामय नेतृत्व के कारण प्रबंधन में परस्पर विश्वास और सक्रिय भागीदारी, कर्मचारियों में संतोष, उत्साह और कंपनियों में उत्पादन-मुनाफा बढ़ गया।

युद्ध का खामियाजा भुगतते हैं बच्चे: यह पूरी मानवता के लिए बेहद चिंताजनक तथ्य है कि आज दुनिया में

लगभग 47 करोड़ बच्चे युद्धग्रस्त क्षेत्रों में रहने को विवश हैं। हम सबको यह समझना जरूरी है कि इतिहास में बच्चे कभी युद्ध का कारण नहीं रहे। न ही कभी वे युद्ध लड़ते हैं। परंतु युद्ध का सबसे ज्यादा खामियाजा उन्हीं को भुगतना पड़ता है। परिवार से बिछड़ना, पढ़ाई छूट जाना, मनोवैज्ञानिक और मानसिक आघात जैसे स्थाई घाव उनके पूरे जीवन को प्रभावित करते हैं। दुर्भाग्य है कि वे हमारी राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय प्राथमिकता नहीं हैं। यदि वैश्विक नेताओं, नेतृत्वकर्ताओं ने अपनी जिम्मेदारी को ठीक से समझा होता तो दुनिया भर में इतने बच्चे असमय मौत के मुंह में न समाते।

आवश्यक है करुणामय शिक्षा प्रणाली: जब तक शिक्षा का उद्देश्य खुद की और देशों की आर्थिक तरक्की मात्र रहेगा, तब तक नागरिक स्वार्थी और आत्मकेंद्रित रहेंगे। इसलिए जरूरी है कि पाठ्यक्रम और शिक्षा नीतियों के माध्यम से बच्चों में एक-दूसरे के प्रति नैतिक जवाबदेही का भाव सिखाया जाए, जिसे हम करुणामय शिक्षा प्रणाली कहते हैं।

तभी होगा वैश्विक चुनौतियों का समाधान: आज दुनिया के सामने मौजूद प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी तमाम वैश्विक चुनौतियों के लिए कई कारण जिम्मेदार हैं। सबसे बड़ा कारण कथनी और करनी का अंतर है। उपभोक्तावाद, औद्योगीकरण और मुनाफा पर आधारित जीवनशैली, पृथ्वी और पर्यावरण के विनाश का बड़ा कारण है। दूसरा कारण, इस दिशा में राजनैतिक इच्छा शक्ति का अभाव है। तीसरा, पर्यावरण विनाश और संरक्षण एकदेशीय नहीं हो सकता। यह धरती पर रहने वाले सभी लोगों को प्रभावित करता है। कम आबादी वाले अमीर देश, ज्यादा आबादी वाले गरीब देशों से कहीं अधिक कार्बन उत्सर्जन करते हैं। इसलिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जवाबदेही तय होनी चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण के लिए मिसाल है भूटान: भूटान ने ऐसे कई प्रयोग किए हैं, जो पर्यावरण, मानवता और संस्कृति की रक्षा के लिए जाने जाते हैं। इसमें ग्रांस हैप्पीनेस इंडेक्स भी शामिल है। खुशी के इस पैमाने को दूसरे कई देश भी मानते हैं। साथ ही भूटान के संविधान में यह प्रावधान है कि देश का सत्तर प्रतिशत जमीन वन क्षेत्र रहेगा, जिससे जैव विविधता और पर्यावरणीय संतुलन बना रहे। वहां के महाराज, जिम्मे खेसर नामग्येल वांगचुक और राजकुमारी सोनम जो सहित राजपरिवार, देश के मुख्य न्यायाधीश और अनेक राजनेताओं के साथ करुणामय समाज बनाने पर ठोस सहमति बनी, जिसे हम मिलकर लागू करने का समयबद्ध कार्यक्रम बना रहे हैं। *

प्रस्तुति: सरस्वती रमेश

लघुकथाएं

यादों का बैंक



शहर में एक नया बैंक खुला-यादों का बैंक। यहां लोग पैसे नहीं, अपनी यादें जमा करते थे। खुशियों की यादों पर अच्छा व्याज मिलता था, जबकि दुखद यादें हटाने के लिए लोग फीस देते थे। एक दिन पचपन वर्षीय अजित वहां पहुंचा। उसने अपनी सबसे प्रिय याद जमा करने का फॉर्म भरा। कर्मचारी ने पूछा, ‘कौन-सी याद है?’ अजित मुस्कुराया, ‘वह दिन, जब मेरा पांच साल का बेटा पहली बार साइकिल चलाते हुए गिर पड़ा था। रोते-रोते फिर उठा और बोला-पापा, मैं हारूंगा नहीं।’ बैंक कर्मचारी चौंका, ‘इतनी प्यारी याद

क्यों जमा करना चाहते हैं? इस पर तो आपको अच्छा लाभ मिलेगा।’ अजित ने धीमे स्वर में कहा, ‘इसलिए क्योंकि मेरा बेटा अब इस दुनिया में नहीं है। उसकी याद हर दिन मुझे रूलाती है।’ याद बैंक की मशीन ने अजीत की उस स्मृति को उसके मन से निकाल कर जमा कर लिया। अजित हल्का महसूस करने लगा। कुछ महीने बाद वह फिर बैंक पहुंचा। इस बार उसके चेहरे पर बेचैनी थी, ‘मुझे अपनी जमा की हुई याद वापस

चाहिए।’ उसने बैंक कर्मों से कहा। ‘लेकिन क्यों? आपने तो दर्द से छुटकारा पाने के लिए उसे जमा किया था!’ अजित की आंखें भर आईं। वह बोला, ‘दर्द चला गया, पर उसके साथ मेरा बेटा भी चला गया। अब मैं रोता नहीं, लेकिन मुस्कुरा भी नहीं पाता। समझ में आया कि कुछ दुख बोझ नहीं होते, वे हमारे अपनों के आखिरी निशान होते हैं।’ बैंक कर्मों ने उसकी याद लौटा दी। बैंक से बाहर निकलते समय अजित की आंखों में आंसू थे, पर होंठों पर मुस्कान भी। उसे पहली बार लगा कि हर घाव भर जाना जरूरी नहीं, कुछ घाव ही हमें इंसान बनाए रखते हैं। *

-कृति आरके जैन

श्रम का संगीत



पत्नी खरटी ले रही थी। पति की नींद खरटी की आवाज से टूट गई थी। यह पहली ही बार था, जब पति को पत्नी के खरटी सुनने का अवसर मिला था। रोज तो पत्नी ही पति के खरटी की वजह से नींद टूटने की शिकायत किया करती थी, आज पति को यह मौका मिल गया था! बस सुबह होने की प्रतीक्षा थी। पति फिर से सोने की कोशिश करने लगा। आंखें मूंदते ही पत्नी की दिनचर्या उसकी आंखों के आगे आ गई, सुबह-सुबह उठना, बच्चों को तैयार करना, नाश्ता कराना, स्कूल बस तक छोड़ना।

आकर पति को जगाना, चाय पिलाना। नाश्ते और लंच की तैयारी में लग जाना। पति के कपड़े निकालकर रखना। उनको नाश्ता कराना। उनका लंच पैक करना। पति के जाने के बाद घर की साफ-सफाई और गंदे कपड़ों को वॉशिंग मशीन में डालना। नहाना-धोना, पूजा-पाठ, नाश्ता करना। बच्चों को स्कूल से लाना। खिलाना-पिलाना,

उनको होमवर्क करवाना। शाम में बच्चों को पार्क ले जाना। फिर साग-सब्जी, दूध, फल और जरूरी सामानों की खरीदारी करना। सबके लिए रात का खाना पकाना। पति के आने पर उन्हें चाय-पानी देना। बच्चों को खिलाकर पति के साथ खाने बैठना। थोड़ी देर टीवी पर कोई सीरियल देखना और फिर सो जाना। ‘यह खरटी तो श्रम का संगीत है!’ पता नहीं कहां से पति के मन में यह साहित्यिक भाव आया? पत्नी के खरटी अब उसे संगीतमय लगने लगे। खरटियों से उसे अब कोई शिकायत नहीं रही। *

- संजीव ठाकुर

संवेदना से भरी कहानियां

चार दशक से अधिक समय से कहानी लेखन में सक्रिय वरिष्ठ लेखक गोविंद सेन की चर्यनित कहानियों का संकलन कुछ समय पूर्व प्रकाशित होकर आया है। इसमें उनकी अठारह कहानियां संकलित हैं। ये कहानियां जीवन की विडंबनाओं और रिशतों की पेचीदगियों को उजागर करने के साथ ही हमारी संवेदनाओं को झकझोरी भी हैं। मिसाल के तौर पर ‘स्पीड ब्रेकर’ कहानी मानवीय मनुवृत्ति को सामने लाती है, जिसमें पढ़े-लिखे व्यक्ति के मन में सहज तौर पर हीनभावना जन्म लेती है, जब उसे अपने से कम शिक्षित व्यक्ति, आर्थिक रूप से अधिक संपन्न दिखाता है।



गरीब तबके के लोगों का जीवन, किस तरह छोटी-छोटी चीजों से भी वंचित रहने का दर्श सहता रहता है, इसका मार्मिक वर्णन ‘गुमशुदा चांद की वापसी’ में किया गया है। संग्रह की एक छोटी सी कहानी ‘दाढ़ी’ में बहुत सरलता से सामाजिक विषमता की दुखती रंग पर अंगुली रखी गई है। संग्रह की लगभग सभी कहानियां पठनीयता से भरपूर हैं। इन कहानियों में न तो किसी वाद का झंडा उठाया गया है, न ही किसी विमर्श को लेकर हाय-तौबा की गई है। जानबूझ कर गंदे गंदे शिल्प और भाषायी कलाबाजियों से मुक्त ये कहानियां बहुत सरल और सहज तरीके से हमारे मन के किसी कोने में हमेशा के लिए दर्ज होने में सक्षम हैं। *

किताब: चर्यनित कहानियां (कहानी-संग्रह), लेखक: गोविंद सेन, मूल्य: 225 रुपए, प्रकाशक: न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली

दुबलेपन की जड़ पर करें वार

MUSHROOMEX[®]

MUSHROOM WEIGHT GAIN AYURVEDIC POWDER

शरीर की 3 ज़रूरी ज़रूरतों में सहायक

भूख को बेहतर बनाने में

नए ब्लड सेल्स बनाने में

पाचन को मज़बूत बनाने में

12 आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों की ताक़त

अयुर्वेद मशरूम प्राकृतिक पोषण और दैनिक ऊर्जा का संपन्न स्रोत

अश्वगंधा ऐश्विन और शेफ़ाली की मधुमेहक के लिए

सफ़ेद मूखली शरीर की ताकत और वाइटेलिटी को समर्थन करें

काली पुसली ऊर्जा और शारीरिक मज़बूती का साथ

ओटी इरुड पाचन शक्ति और पोषण उपयोग का श्रेष्ठ आयुर्वेदिक आधार

2 करोड़+ संतुष्ट ग्राहकों का भरोसा

10 दिनों में फर्क दिखाना शुरू*

आपके नज़दीकी सभी मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध ! Also Available at : www.mymushroomworld.com | amazon.in | Filppart.in

Mushroom World Ayurved & Food Pvt. Ltd. For Trade Enquiry - +91 888 922 5353

लोक-संस्कृति / शिखर चंद जैन

दुनिया के अनेक देशों की संस्कृतियों में बादल और बारिश को उम्मीद, समृद्धि और जीवन का संदेशवाहक माना जाता है। इसी खुशी को अलग-अलग देशों में अनूठे उत्सवों, लोक-परंपराओं, प्रार्थनाओं, नृत्य और सामुदायिक अनुष्ठानों के जरिए उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। वर्षा ऋतु से जुड़े ऐसे ही कुछ उत्सवों पर एक नजर।



दुनिया भर में मनाते हैं रंग-बिरंगे वर्षा उत्सव



चाऊ की खूबसूरत घाटी में होता है। इस उत्सव में गांव के लोग पारंपरिक वाद्ययंत्र बजाते हैं, सामूहिक रूप में लोक गीत गाते हैं और अच्छी बारिश की कामना के लिए अनुष्ठान करते हैं। वियतनाम में रहने वाले जराई समुदाय के लोग प्लो ऑई नामक वर्षा प्रार्थना उत्सव, किसी राष्ट्रीय ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्थल पर सामूहिक तौर पर मनाते हैं। यह आयुन हा कम्यून और जिया लाई प्रांत में मनाया जाता है। *

बरशा बंदोना, बांग्लादेश

हमारे पड़ोसी देश बांग्लादेश में आषाढ़ महीने के पहले दिन मनाए जाने वाले इस उत्सव बरशा बंदोना में संगीत, कविता पाठ और साल की पहली बारिश में स्नान करने की अनूठी परंपरा है। इस उत्सव में ग्रामीण महिलाएं आसमानी नीले रंग की साड़ियां पहनकर बादलों का स्वागत करती हैं। वर्षा का आह्वान करती हैं। *



वर्षा प्रार्थना महोत्सव, वियतनाम

मार्च के शुष्क मौसम में वियतनाम के हा जियांग प्रांत में लो लो समुदाय के लोग पारंपरिक नृत्य और प्रार्थना के माध्यम से बादलों से पानी बरसाने की गुहार लगाते हैं। इसमें तांबे के प्राचीन ड्रम बजाना और पुजारी (शमन) द्वारा प्राकृतिक शक्तियों को प्रसन्न करने वाले मंत्रोच्चार शामिल होते हैं, जिसके बाद सामूहिक भोजन का आयोजन होता है। वियतनाम का एक अन्य श्वेत थाई अल्पसंख्यक समुदाय जेन, बारिश के आगमन पर फोन महोत्सव मनाता है। यह उत्सव उत्तर-पश्चिमी वियतनाम की माई



हरियाली तीज पर झूला झूलती महिलाएं



प्रकृति से जुड़ाव का पर्व साओ जोआओ

भारत में मनाए जाने वाले वर्षा उत्सव

अपने देश भारत के अलग-अलग भागों में भी बारिश के आगमन पर, इसके स्वागत के लिए कई पारंपरिक उत्सव मनाए जाते हैं।
हरियाली तीज: राजस्थान समेत उत्तर भारत के कई राज्यों के ग्रामीण और आंचलिक क्षेत्रों में वर्षा ऋतु के आगमन पर प्रकृति की हरियाली और बादलों का स्वागत करने के लिए हरियाली तीज पर्व मनाते हैं। इस पर्व से धार्मिक आस्था भी जुड़ी हुई है। महिलाएं मंगवान शिव और माता पार्वती की पूजा करती हैं और स्त रखती हैं। इसके अलावा आपसी समुदाय और आस-पड़ोस की महिलाएं किसी बाग-बगीचे में सामूहिक तौर पर झूला झूलती हैं और पारंपरिक लोकगीत गाती हैं।
साओ जोआओ: मानसून की शुरुआत में गोवा में मनाया जाने वाला अग्रेजा त्योहार है, साओ जोआओ। इस पर्व में युवा मानसूनी बारिश के पानी से भरे कुओं और तालाबों में कूदकर प्रकृति के इस उपहार का जश्न मनाते हैं। इस उत्सव पर लोग सिर पर फलों के मुकुट भी पहनते हैं। इस तरह यह पर्व प्रकृति से हमारे जुड़ाव और उस पर निर्भरता को प्रकट करता है।
सापुतारा मानसून महोत्सव: गुजरात राज्य में मनाया जाने वाला सापुतारा मानसून महोत्सव, भारत के चुनिंदा उत्सवों में से है जो विशेष रूप से आसमान में तेरते बादलों, धुंध और बारिश के मनोरम मौसम को समर्पित है। इस पर्व से भी स्थानीय लोक संस्कृति की कई परंपराएं जुड़ी हुई हैं।

नेचुरल प्लेस / बाल मुकुंद ओझा

लंदन, दुनिया के अग्रणी पर्यटन स्थलों में से एक है। यहां अगर तापमान 22 डिग्री सेल्सियस हो तो यह अच्छे मौसम का परिचायक माना जाता है। लंदन प्रवास के दौरान एक दिन ऐसे ही अनुकूल मौसम का फायदा उठाते हुए हमने सपरिवार घूमने का प्रोग्राम बनाया और पहुंच गए बॉक्स हिल की तलहटी पर बहने वाली मोल नदी पर बने मशहूर स्टेपिंग स्टॉप्स पर।
खूबसूरत वॉकिंग प्लेस: मोल नदी, दक्षिणी इंग्लैंड में टेम्स नदी की एक सहायक नदी है। यह गेटविक एयरपोर्ट के पास वेस्ट ससेक्स में निकलती है और सरे शहर से उत्तर-पश्चिम में 80 किमी. बहकर हैंपटन कोर्ट पैलेस में टेम्स नदी तक पहुंचती है। यह नदी सरे जिले के मोल वैली को अपना नाम देती है। यह खूबसूरत वॉकिंग प्लेस, साउथ लंदन स्थित हमारे घर से लगभग 50 किमी. दूर ही है। स्टेपिंग स्टॉप्स, सरे काउंटी स्टेट के इस हिस्से में एक मशहूर जगह है और नदी को बहते हुए बिल्कुल करीब से देखने के लिए यह एक परफेक्ट जगह है।

बराक नदी केवल जलधारा नहीं, बल्कि ब्रह्मपुत्र के बाद उत्तर-पूर्व भारत की अर्थव्यवस्था, कृषि, संस्कृति और पारिस्थितिकी की दूसरी महत्वपूर्ण जीवन रेखा है। इस नदी की विशेषताओं के बारे में जानिए।

पूर्वोत्तर भारत की दूसरी जीवन रेखा बराक नदी

विशिष्ट नदी

वीना गौतम

नदियां जीवनदायिनी होती हैं। नदी किनारे ही दुनिया की सभी सभ्यताएं व संस्कृतियां फली-फूली हैं। पूर्वोत्तर भारत की नदियों की बात करें, तो ब्रह्मपुत्र के बाद बराक नदी, दूसरी महत्वपूर्ण नदी है। बराक नदी के बारे में कहा जाता है कि यह केवल एक जलधारा नहीं है बल्कि एक जीवंत सभ्यता, संस्कृति और पारिस्थितिकी का आधार है।
उद्गम और अपवाह तंत्र: बराक नदी मणिपुर से निकलती है और असम की बराक घाटी से होकर बहती है। बराक घाटी से आगे बढ़कर यह बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है और वहां यह मेघना नदी घाटी तंत्र का हिस्सा बन जाती है। मणिपुर में जहां बराक नदी का जन्म होता है, वहां यह छोटी-छोटी धाराओं के रूप में आगे बढ़ती है और फिर आगे चलकर एक विशाल नदी का रूप ले लेती है। इसकी कुल लंबाई 900 किलोमीटर है और इसका प्रवाह क्षेत्र मणिपुर, मिजोरम



और असम है। बांग्लादेश में घुसने के बाद यह दो धाराओं में बंट जाती है। एक सूसा और दूसरा कुशियारा। जब यह मेघना नदी घाटी तंत्र का हिस्सा बनकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है, उस समय यह भारत और बांग्लादेश के बीच एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय जलधारा का रूप ले लेती है।
पारिस्थितिकीय महत्व: बराक नदी का बेसिन जैव-विविधता का समृद्ध केंद्र है। घने वनों, वेटलैंड और मैदानों से भरपूर इलाकों से गुजरती बराक नदी, दर्जनों किस्म की मछलियों, सैकड़ों किस्म के

बिना फिसले संतुलन बनाए रखने की कोशिश करते हैं। ये बैलेंस ब्लॉक, शारीरिक गतिविधि और सक्रिय प्रयास को बढ़ावा देते हैं। विशेषकर बच्चे, किशोर और युवाओं को ये स्टेपिंग स्टॉप्स, पूरे शरीर के व्यायाम के लिए कूदने, खिंचाव, चढ़ाई और संतुलन बनाने के लिए प्रेरित करते हैं।
मैंने भी नदी को इन लगभग 15 स्टेपिंग स्टॉप्स पर चलकर पार किया। कई बार बैलेंस बिगड़ा मगर तुरंत संभल भी गया। एक बारगी तो ऐसे लगा जैसे इस बार तो गिर ही जाऊंगा, मगर इन स्टेपिंग स्टॉप्स को आखिर पार कर ही लिया।

दूसरी तरफ हैं शानदार नजारों: एक बार स्टेपिंग स्टोन पार करने के बाद, रास्ता नदी के साथ-साथ चलता है, जहां से पानी और आस-पास की मंत्र मुग्ध कर देने वाली हरियाली के खूबसूरत नजारे दिखते हैं। बॉक्स हिल स्टेपिंग स्टॉप्स वॉक, सरे हिल्स नेशनल लैंडस्केप में 3.2 किमी. का हाइकिंग रूट है। लगभग 1 घंटे में 477 फीट की चढ़ाई चढ़ लेते हैं। वॉक का यह हिस्सा थोड़ा मुश्किल है, लेकिन बहुत रोमांचक है। *

साल को उपजाऊ मिट्टी लेकर आती है, वह एक तरह से उत्तर पूर्व का खाद्यान्न भंडार भरती है। असल में यह नदी जल परिवहन का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। बराक नदी केवल जल का नहीं बल्कि कृषि, रोजगार और आर्थिक स्थिरता का भी स्रोत है।
ऐ ति हा सि क - स मा जि क - सांस्कृतिक महत्व: बराक नदी के किनारे बसे गांवों में त्योहारों पर अकसर मेलों का आयोजन होता है। बराक नदी के किनारे बंगाली और दूसरे समुदायों का निवास है, जिनकी सांस्कृतिक पहचान में इस नदी का महत्वपूर्ण योगदान है। इतिहास में बराक नदी ने उत्तर-पूर्व को अन्य क्षेत्रों से जोड़ने का महत्वपूर्ण काम किया था। प्राचीन और मध्यकाल में यह व्यापारिक मार्ग रही है। सिलचर जैसा सांस्कृतिक शहर इसी नदी के किनारे विकसित हुआ है।
संरक्षण है जरूरी: उत्तर-पूर्व की यह दूसरी सबसे महत्वपूर्ण नदी कई तरह की समस्याओं, जैसे- प्रदूषण, अवैध रेत खनन, जलवायु परिवर्तन आदि का सामना कर रही है। यदि इसका संरक्षण न हुआ तो पूर्वोत्तर भारत की यह दूसरी जीवनरेखा संकट में पड़ सकती है। *

लक्ष्य निर्धारण से मिलेगी करियर में निश्चित सफलता

बदलते दौर में किसी करियर में सफल होने के लिए केवल मेहनत नहीं, बल्कि निश्चित लक्ष्य और सही दिशा का होना भी जरूरी है। स्पष्ट लक्ष्य व्यक्ति को अवसर पहचानने, बेहतर निर्णय लेने और निरंतर सीखते रहने की प्रेरणा देते हैं। अपना लक्ष्य कैसे निर्धारित करें, किस तरह उसे प्राप्त करें, बहुत उपयोगी सलाह।

सेल्फ इंफुवमेंट

नरेंद्र कुमार

मशहूर करियर काउंसलर रिचर्ड एन. बोल्स ने अपनी किताब 'व्हाट कलर इज योर पैराशूट' में लिखा है, 'करियर में ऊंची उड़ान भरनी है तो पहले अपनी मंजिल तय करें।' तकनीक, एआई, ऑटोमेशन और बदलते रोजगार बाजार ने करियर की दुनिया को पूरी तरह से बदल दिया है। आज सफलता केवल कड़ी मेहनत से नहीं मिलती बल्कि उस सही दिशा से मिलती है, जिसे लक्ष्य निर्धारण या गोल सेटिंग कहा जाता है।
लक्ष्य देता है स्पष्ट दिशा: मानव मस्तिष्क तब सबसे प्रभावी ढंग से काम करता है, जब उसे स्पष्ट उद्देश्य हासिल होता है। मनोविज्ञान बताता है कि लक्ष्य हमारे ध्यान, ऊर्जा और निर्णयों को एक दिशा में केंद्रित करते हैं। बिना लक्ष्य के व्यक्ति अनेक काम करता है, लेकिन उसकी ऊर्जा बिखर जाती है। जबकि स्पष्ट लक्ष्य उसे बताते हैं कि कौन-सा काम महत्वपूर्ण है और कौन-सा बिना किए भी चल जाएगा। यही कारण है कि उद्यमी, वैज्ञानिक, खिलाड़ी और प्रशासक अपने बड़े उद्देश्यों को छोटे-छोटे लक्ष्यों में बांटकर काम करते हैं।

गोल सेटिंग से बढ़ती उत्पादकता: स्पष्ट लक्ष्य व्यक्ति को समय का महत्व समझाता है। जब किसी व्यक्ति के पास निर्धारित लक्ष्य होता है, तो वह लगातार सीखने के लिए प्रेरित होता है। मसलन यदि किसी का उद्देश्य साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ बनना है तो नेटवर्किंग, क्लाउड सिक्योरिटी, एथिकल हैकिंग और एआई आधारित सुरक्षा प्रणालियों का लगातार अध्ययन करता है। वास्तव में यही सीखने की प्रवृत्ति भविष्य में उसकी बड़ी ताकत बनती है।
निर्णय लेना सीखिए: करियर में हर दिन छोटे-बड़े निर्णय लेने होते हैं- नई नौकरी स्वीकारें या नहीं, कौन-सा कोर्स करें, किस तकनीक को सीखें, किस अवसर को छोड़ दें या ऐसी बातें हैं जो हर उस व्यक्ति के सामने आती ही आती हैं। जो अभी अपने करियर में आगे बढ़ने की दिशा में होता है। ऐसे में यदि आपका लक्ष्य स्पष्ट है तो निर्णय लेना सरल हो जाता है, क्योंकि



हर विकल्प को उसी कसौटी पर परखा जाता है कि वह हमें हमारे उद्देश्य के कितना निकट ले जाएगा।
छोटे-छोटे लक्ष्य प्राप्त करें: जब व्यक्ति छोटे लक्ष्य पूरा करता है तो उसका अपनी क्षमता पर भरोसा बढ़ने लगता है। वास्तव में यही आत्मविश्वास उसे बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रेरित करता है और यही आत्मविश्वास बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए उसका आधार बनता है। करियर की लंबी यात्रा में यह

ऐसे डिसाइड करें टारगेट

कुछ करियर काउंसलर लक्ष्य तय करने के मामले में एक स्मार्ट मॉडल अपनाने की सलाह देते हैं।
उनके अनुसार ऐसे लक्ष्य बनाएं, जो बिल्कुल स्पष्ट हों, जिसे हासिल किया जा सके, यानी जो आपकी क्षमताओं के अनुकूल हों। लक्ष्य ऐसा हो, जो वर्तमान समय में प्रासंगिक करियर हो, जिस तक एक समयबद्ध रफ्तार से पहुंचा जा सके।

मानसिक ताकत बेहद जरूरी होती है।
बदलें अपनी रणनीति: जिन लोगों के पास कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं होता, वे एक समय के बाद ठहर जाते हैं। कोई परियोजना अपेक्षित परिणाम नहीं देती है। ऐसे में वे बार-बार असफल होने लगते हैं। लेकिन जिनके पास अपने लक्ष्य की स्पष्ट दिशा होती है, वे इन बातों से परेशान नहीं होते। वे अपनी रणनीति बदलते हैं, सीखते हैं और फिर आगे बढ़ जाते हैं।
मजबूत नेटवर्क बनाएं: जब व्यक्ति के करियर का अपना लक्ष्य तय होता है, तो वह अपने तय लक्ष्य के वरिष्ठों और विशेषज्ञों के साथ नेटवर्किंग मजबूत करता है, क्योंकि उसे पता होता है कि आज नहीं तो कल उसे इन्हीं के साथ काम करना है। यह नेटवर्क इसके लिए बहुत काम का साबित होता है। *

मर्लिन मुनरो से इंस्पायर रहीं बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेससेस

हॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेससेस में शामिल रहीं मर्लिन मुनरो ने दुनिया भर के दर्शकों को ही नहीं, हिंदी सिनेमा की कई फेमस एक्ट्रेससेस को भी इंस्पायर किया। मर्लिन मुनरो की जन्मशती केवल एक एक्ट्रेस को याद करने का अवसर नहीं, बल्कि उस खूबसूरती, ग्लैमर और व्यक्तित्व के प्रभाव को समझने का भी समय है।

ग्लैमर आइकन

डी. जे. नंदन

साल 2026, 20वीं सदी की सबसे मशहूर हॉलीवुड एक्ट्रेस में से एक मर्लिन मुनरो का जन्मशती वर्ष है। मर्लिन मुनरो की जन्मशती केवल हॉलीवुड के लिए खास नहीं है, बॉलीवुड के लिए भी यह विशेष है। क्योंकि बॉलीवुड में भी मर्लिन मुनरो के ग्लैमर ने न केवल अपनी स्थाई छाप छोड़ी है बल्कि आज भी बॉलीवुड के ग्लैमर में मर्लिन मुनरो की साफ-साफ मौजूदगी देखी जा सकती है। हालांकि मर्लिन ने कभी-भी बॉलीवुड की कोई फिल्म नहीं की, लेकिन उनकी छवि, उनका ग्लैमर, उनका फैशन सेंस और कैमरे के सामने उनकी सहज आत्मविश्वास से भरी मौजूदगी ने बॉलीवुड की कई पीढ़ियों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित किया है।
बॉलीवुड पर प्रभाव: वास्तव में 1950 और 1960 के दशक का भारतीय सिनेमा, परिवर्तन के दौर का सिनेमा था। पहले जहां नायिकाएं सादगी और पारंपरिक पहनावों तक सीमित रहती थीं, वहीं धीरे-धीरे आधुनिक परिधान, पश्चिमी फैशन और कहीं ज्यादा आत्मविश्वासी नायिका पदों पर दिखाई देने लगीं, जिसमें मर्लिन मुनरो के ग्लैमर का साफ-साफ असर देखा जा सकता है। भारतीय फिल्मों की नायिकाओं ने मर्लिन मुनरो

से बहुत कुछ सीखा है और बहुत कुछ उनकी तरह बनने और ढलने की भी कोशिश की है। मर्लिन मुनरो की मुस्कान, कैमरे के सामने संवाद अदा करने का उनका अंदाज, बॉडी लैंग्वेज और फैशन ने भारतीय फिल्मकारों को यह एहसास कराया कि ग्लैमर भी अभिनय की भाषा का हिस्सा हो सकता है।

मर्लिन मुनरो से मधुबाला की तुलना: बॉलीवुड की जिस नायिका पर सबसे पहला और सबसे ज्यादा मर्लिन मुनरो का असर दिखा, वह मधुबाला थीं। उस दौर में अकसर मधुबाला की तुलना मर्लिन मुनरो से की जाती थी। दोनों ही असाधारण सुंदर थीं, दोनों के पास सहज मुस्कान का जबर्दस्त जादू था और दोनों ही कम उम्र में असमय मृत्यु को प्राप्त हुईं। हिंदी सिनेमा के दर्शक मधुबाला को मर्लिन मुनरो की तरह देखते थे। हालांकि दोनों की अभिनय शैली और फिल्मी यात्रा एक-दूसरे से बिल्कुल अलग थे। फिर भी यह सच है कि दोनों अपने-अपने देशों में सौंदर्य और आकर्षण का स्थाई प्रतीक बन गईं। मधुबाला की लोकप्रियता भारतीय सांस्कृतिक परिवेश में



मधुबाला



जीनत अमान



दीपिका पादुकोण



दीपिका पादुकोण



विकसित हुई, जबकि मर्लिन वैश्विक पॉप कल्चर की पहचान बनीं।
परवीन बांबी-जीनत अमान पर प्रभाव: परवीन बांबी की भी तुलना कई संदर्भों में मर्लिन मुनरो से की जाती है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि अगर पश्चिमी ग्लैमर की सबसे साफ झलक बॉलीवुड की किसी अभिनेत्री में आजतक सबसे ज्यादा दिखी है, तो वह परवीन बांबी ही थीं। 1970 और 1980 के दशक में उन्होंने भारतीय फिल्मों में आधुनिक, आत्मनिर्भर और फैशनेबल महिला की नई छवि प्रस्तुत की थी। पश्चिमी परिधान, खुले विचार और कैमरे के सामने सहज आत्मविश्वास ने उन्हें उस दौर की सबसे अलग अभिनेत्री बना दिया था। ऐसे ही जीनत अमान ने एक दौर में न सिर्फ बॉलीवुड अभिनेत्रियों को पारंपरिक परिभाषा को बदला था बल्कि वह भी पश्चिमी फैशन, मर्लिन मुनरो की तरह बड़े-बड़े धूप के चश्मे, स्टाइलिश गाउन पहनने और आत्मविश्वास से बॉलीवुड की सिने स्क्रीन को अपनी मौजूदगी से चौंधिया दिया था। हालांकि जीनत अमान या परवीन बांबी के बारे में यह नहीं कह सकते कि वे सीधे-सीधे मर्लिन मुनरो को कॉपी करती थीं। इन दोनों ग्लैमरस एक्ट्रेससेस ने मुनरो से प्रेरणा तो ली थी, लेकिन उन्होंने अपना ग्लैमर भारतीय संदर्भों में विकसित किया था।
इन एक्ट्रेससेस पर भी दिखा असर: 1980-90 के दशक में श्रीदेवी ने ग्लैमर और अभिनय का वैसा ही संतुलन पेश किया था, जैसा कभी मर्लिन मुनरो ने हॉलीवुड में किया था। श्रीदेवी के अभिनय में उनका गजब का आकर्षण शामिल होकर उन्हें अद्वितीय बनाता था। बाद की पीढ़ियों में करीना कपूर, प्रियंका चोपड़ा और दीपिका पादुकोण भी अपने ग्लैमर के प्रदर्शन में मर्लिन मुनरो से प्रेरित दिखाई पड़ती हैं। *